पूजा नं. १

तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थ पूजा

समुच्चय पूजा

स्थापना (शंभु छन्द)

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव से, महावीर तक करूँ नमन।
चौबीसों जिनवर की पावन, जन्मभूमियों को वन्दन।।
जैनी संस्कृति के दिग्दर्शक, इन तीर्थों का करूँ यजन।
मेरी आत्मा बने अजन्मा, जन्मभूमि का कर पूजन।।१।।

दोहा

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
पूजन के प्रारंभ में, है यह विधि महान।।२।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

(अष्टक) शंभु छन्द

गंगा में डुबकी लगा-लगा, मैंने निज को पावन माना।
अब भावकर्ममल धोने को, पूजन में जलधारा डाला।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।१।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

निज आत्मशांति पाने हेतू, तीरथ वंदन अवलंबन है।
उनके अर्चन के लिए घिसा, मैंने मलयागिरि चंदन है।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।२।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षयपद की प्राप्ति हेतु, जहाँ से जिनवर के कदम बढ़े।
उन जन्मक्षेत्र के परमाणू को, मेरे अक्षतपुंज चढ़े।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।३।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

जहाँ विषयभोग का सारा सुख, क्षणभर में प्रभु ने त्याग दिया।
उन पावन पूज्य नगरियों को, मैंने पुष्पांजलि चढ़ा दिया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।४।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

जहाँ स्वर्ग का भोजन आता था, फिर भी प्रभु उसको छोड़ चले।
अब मेरा यह नैवेद्य थाल, अर्पित है उन तीर्थों के लिए।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।५।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

जहाँ मोह राग का बंधन भी, जिनवर को नहीं लुभा पाया।
उन जन्मभूमियों की आरति, करने को दीप जला लाया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।६।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

कर्मों को शीघ्र जलाने का, जिनवर ने जहाँ पुरुषार्थ किया।
मैंने भी धूप जला तीरथ की, पूजन का पुरुषार्थ किया।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।७।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

संसार सुखों को भोग जहाँ, मुक्तीफल की अभिलाषा थी।
फल से पूजा करते-करते, मैंने भी यह अभिलाषा की।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।८।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

जल गंध व अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल आदि सहित।
''चन्दनामती'' ये अष्ट द्रव्य, प्रभु जन्मभूमियों को अर्पित।।
तीर्थंकर प्रभु की जन्मभूमियाँ, युग की अमिट धरोहर हैं।
इन तीर्थों का अर्चन करके, चाहूँ अब अजर अमर पद मैं।।९।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिवर्धमानान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमितीर्थेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

दोहा—**कंचन झारी में भरा, प्रासुक निर्मल नीर।**
शांतीधारा कर प्रभो, पाऊँ भवदधि तीर।।

शांतये शांतिधारा

भाँति-भाँति के पुष्प को, अंजलि में भर लाय।
पुष्पांजलि करते हृदय, की कलिका खिल जाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

अथ प्रत्येक अर्घ्य

शंभु छन्द

इस भरतक्षेत्र के आर्यखण्ड में, शाश्वत तीर्थ अयोध्या है।
जहाँ सदा जन्मते तीर्थंकर, इन्द्रों से पूज्य सर्वदा है।।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में, कुछ कालदोष का कारण है।
उन्नीस प्रभू के जन्म हुए, अन्यत्र तभी वे पावन हैं।।

दोहा

तीर्थंकर अरु तीर्थ को, नमन करूँ शत बार।
जन्मभूमियों को सभी, प्रणमूँ बारम्बार।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

पहले तीर्थंकर ऋषभदेव, फिर हुए अजित अभिनन्दन हैं।
फिर सुमतिनाथ एवं अनन्त, इन पाँच प्रभू को वन्दन है।।
इस युग में तीर्थ अयोध्या में, जन्मे ये पाँच जिनेश्वर हैं।
अतएव अयोध्या नगरी के प्रति, मेरा अर्घ्य समर्पित है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर ऋषभदेव अजितनाथ अभिनन्दननाथ सुमतिनाथ अनंतनाथ पंचतीर्थंकराणां जन्मभूमि अयोध्या तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर संभवनाथ तृतिय, श्रावस्ती नगरी में जन्में।
कार्तिक सुदि पूनो तिथि के दिन, मेला लगता प्रति वर्षों में।।
उत्तुंग जिनालय जहाँ तीर्थ की, महिमा को बतलाता है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ नित, प्रभु दर्शन की अभिलाषा है।।२।।

ॐ ह्रीं तृतीय तीर्थंकर श्री संभवनाथ जिनेन्द्रस्य जन्मभूमि श्रावस्ती तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

छट्ठे तीर्थंकर पदम प्रभु से, कौशाम्बी नगरी पावन।
जिन जन्म समय में इन्द्रों ने भी, आकर उसको किया नमन।।
प्राचीन जिनालय उस भूमी की, गौरव गाथा कहता है।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु, आतमसुख की बस इच्छा है।।३।।

ॐ ह्रीं षष्ठतीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि नगरी में, सुपार्श्व अरु पारस तीर्थंकर जन्मे।
पन्द्रह-पन्द्रह महिने जहाँ बरसे, रत्न मात के आँगन में।।
वाराणसि का वह क्षेत्र आज भी, पावन माना जाता है।
उस तीरथ का कण-कण पूजूं, वहाँ जिनमंदिर सुखदाता है।।४।।

ॐ ह्रीं सप्तमतीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ त्रयोविंशतितम तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की, जन्मभूमि है चन्द्रपुरी।
जहाँ जिनवर के जन्मोत्सव में, आई थी पूरी स्वर्गपुरी।।
वाराणसि नगरी के समीप, निर्मित प्राचीन जिनालय है।
उस चन्द्रपुरी को अर्घ्य चढ़ा, मैं चाहूँ निज सुख आलय है।।५।।

ॐ ह्रीं अष्टमतीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि चन्द्रपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

काकन्दी में प्रभु पुष्पदन्त, नवमें तीर्थंकर जन्मे थे।
वहाँ पन्द्रह महिने तक कुबेर के, द्वारा रत्न बरसते थे।।
सौधर्म इन्द्र शचि इन्द्राणी के, साथ जहाँ पर था आया।
उस पुण्य तीर्थ काकन्दी की, पूजन करने मैं भी आया।।६।।

ॐ ह्रीं नवमतीर्थंकर श्रीपुष्पदंतजिनेन्द्रस्य जन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवें तीर्थंकर शीतलप्रभु, भद्रिकापुरी जन्मस्थल है।
जहाँ खेले वे जिनराज, देवताओं के संग बालकपन में।।
जिनवर के पुण्य प्रभावों से, वह नगरी अब भी वंद्य कही।
उस भद्दिलपुर को अर्घ्य चढ़ा, मैं पाना चाहूँ पुण्यमही।।७।।

ॐ ह्रीं दशमतीर्थंकर श्रीशीतलजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि भद्रिकापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ, जन्मे थे सिंहपुरी।
जो सारनाथ से है प्रसिद्ध, निकटस्थ है वाराणसि नगरी।।
प्रभु की अतिशयकारी विशाल, प्रतिमा वहाँ सुखद विराज रहीं।
उस तीरथ सिंहपुरी की रज को, वंदूं पाऊँ जन्म वहीं।।८।।

ॐ ह्रीं एकादशमतीर्थंकर श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि सिंहपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुर में प्रभु वासुपूज्य, तीर्थंकर जन्मे सुखदाता।
उनके पाँचों कल्याणक से, वह सिद्धक्षेत्र भी कहलाता।।
उस चम्पापुर की अष्टद्रव्य ले, पूजन करने को आया।
तीरथ वन्दन का पुण्य मिले, बस यही आश मन में लाया।।९।।

ॐ ह्रीं द्वादशमतीर्थंकर श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि चम्पापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कम्पिलापुरी में तेरहवें, तीर्थंकर विमलनाथ जन्मे।
इक भव्य जिनालय बना हुआ, है कम्पिल जी के परिसर में।।
भगवान विमल प्रभु तीर्थंकर की, प्रतिमा भी मनहारी है।
आत्मा को तीर्थ बनाने हेतू, पूजन यह सुखकारी है।।१०।।

ॐ ह्रीं त्रयोदशम तीर्थंकर श्री विमलनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कम्पिलतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रहवें तीर्थंकर श्री धर्मनाथ जन्मस्थल रत्नपुरी।
इस नगरी से अतिशयकारी, गजमोती की इक कथा जुड़ी।।
दो सत्य कथानक कहने वाली, रत्नपुरी को वंदन है।
श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के, चरणों में अर्घ्य समर्पण है।।११।।

ॐ ह्रीं पञ्चदशम तीर्थंकर श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमिरत्नपुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिकुंथु अरनाथ प्रभू की, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।
सोलहवें सत्रहवें अट्ठारहवें, तीर्थंकर त्रय की।।
तीरथ प्राचीन कहा ही है, वहाँ जम्बूद्वीप बना प्यारा।
उस जन्मभूमि का अर्चन कर, मैं सफल करूँ जीवन सारा।।१२।।

ॐ ह्रीं षोडशम सप्तदशम अष्टादशम तीर्थंकरत्रयश्रीशांतिकुंथ्वरजिनेन्द्राणां जन्मभूमि हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलानगरी श्री मल्लिनाथ, नमिनाथ की जन्मस्थली कही।
दोनों तीर्थंकर के युग में, वहाँ रत्नवृष्टि भी खूब हुई।।
इन्द्रों द्वारा यह वंदित है, इस नगरी का वन्दन कर लो।
ले अष्टद्रव्य का थाल प्रभू की, जन्मभूमि अर्चन कर लो।।१३।।

ॐ ह्रीं एकोनविंशतितम एकविंशतितमद्वयतीर्थंकर श्री मल्लिनाथनमिनाथ जिनेन्द्रयोः जन्मभूमि मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु जी, जन्मे राजगृह नगरी में।
वहाँ खड्गासन मुनिसुव्रत प्रभु की, प्रतिमा अतिशय सुन्दर है।।
महावीर प्रभू की प्रथम दिव्यध्वनि, वहीं खिरी विपुलाचल पर।
उस पंचपहाड़ी से शोभित, राजगृहि को पूजूँ रुचिधर।।१४।।

ॐ ह्रीं विंशतितम तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि राजगृही तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शौरीपुर नगरी है प्रसिद्ध, नेमिप्रभु के जन्मस्थल से।
राजुल को ब्याहन चले जहाँ से, नेमिनाथ जूनागढ़ में।।
नहिं ब्याह किया लेकिन वे तो, चल दिये मुक्तिकन्या वरने।
उस शौरीपुर को नमन करूँ, औ अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ती से।।१५।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशतितम तीर्थंकर श्रीनेमिनाथजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि शौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिसवें अंतिम तीर्थंकर का, जन्म हुआ कुण्डलपुर में।
जो नालंदा औ राजगृही के, निकट बसा अद्यावधि है।।
वहाँ नंद्यावर्त महल परिसर में, महावीर प्रभु मंदिर है।
उस प्रान्त बिहार का कुण्डलपुर, सचमुच जिनशासन का दिल है।।१६।।

ॐ ह्रीं अंतिम तीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्रस्य जन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चौबिस तीर्थंकर भगवन्तों की, सोलह जन्मभूमियाँ हैं।
है प्रथम अयोध्या एवं अंतिम, कुण्डलपुर की महिमा है।।
जिनवर के जन्मों से पावन, भारतभूमि का कण-कण है।
इस भरतक्षेत्र के भारत को, इसलिए मेरा शत वंदन है।।१७।।

ॐ ह्रीं अयोध्याप्रभृति कुण्डलपुर पर्यन्त वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकराणां समस्त जन्मभूमितीर्थक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं षोडशजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

शेर छन्द

जय जय जिनेन्द्र जन्मभूमियाँ प्रधान हैं।
जय जय जिनेन्द्र धर्म की महिमा महान है।।
जय जय सुरेन्द्रवंद्य ये धरा पवित्र हैं ।
जय जय नरेन्द्र वंद्य ये तीरथ प्रसिद्ध हैं।।१।।

मिश्री से जैसे अन्न में मिठास आती है।
वैसे ही पवित्रात्मा तीरथ बनाती हैं।।
हो गर्भ जन्म दीक्षा व ज्ञान जहाँ पर।
वे तीर्थ कहे जाते हैं आज धरा पर।।२।।

जिनवर जनम से पहले वहाँ इन्द्र आते हैं।
नगरी को सुसज्जित कर उत्सव मनाते हैं।।
सुंदर महल सजाया जाता है वहाँ पर।
जिनवर के पिता-माता रहते हैं वहाँ पर।।३।।

पहली जनमभूमि तो नगरी है अयोध्या।
तीर्थंकरों की शाश्वत जननी है अयोध्या।।
इस युग में किन्तु पाँच जिनेश्वर वहाँ जन्मे।
वृषभाजित अभीनंदन सुमति अनंत हैं।।४।।

श्रावस्ती ने संभव जिनेन्द्र को जनम दिया।
कौशाम्बी में श्रीपद्मप्रभू ने जनम लिया।।
वाराणसी सुपार्श्व पार्श्व से पवित्र है।
श्रीचन्द्रपुरी चन्द्रप्रभू से प्रसिद्ध है।।५।।

काकन्दी को सौभाग्य मिला पुष्पदंत का।
है भद्रपुरी जन्मस्थल शीतल जिनेन्द्र का।।
श्रेयाँसनाथ से पवित्र सारनाथ है।
जिनशास्त्रों में जो सिंहपुरी से विख्यात है।।६।।

श्रीवासुपूज्य जन्मभूमि चम्पापुरी है।
कम्पिल जी विमलनाथ जिनकी जन्मस्थली है।।
तीरथ रतनपुरी है धर्मनाथ की भूमी।
रौनाही से प्रसिद्ध है वह आज भी भूमी।।७।।

श्रीशांति कुंथु अरहनाथ हस्तिनापुर में।
जन्मे जिनेन्द्र तीनों त्रयलोक भी हरषे।।
मिथिलापुरी में मल्लि व नमिनाथ जी जन्मे।
तीर्थेश मुनिसुव्रत जी राजगृही में।।८।।

है जन्मभूमि शौरीपुर नेमिनाथ की।
महावीर से कुण्डलपुरी नगरी सनाथ थी।।
चौबीस जिनवरों की जन्मभूमि को नमूँ।
कर बार-बार वंदना सार्थक जनम करूँ।।९।।

श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
कई जन्मभूमियों में नई ज्योति तब जली।।
उन प्रेरणा से ही यह पूजा रची गई।
तीरथ की भक्ति मेरे मन में बसी हुई।।१०।।

प्रभु बार-बार मैं जगत में जन्म ना धरूँ।
इक बार जन्मधार बस जीवन सफल करूँ।।
इस भाव से ही जन्मभूमि अर्चना करूँ।
निज भाव तीर्थ प्राप्ति की अभ्यर्थना करूँ।।११।।

बस ''चन्दनामती'' की इक आश है यही।
संयम की ही परिपूर्णता जीवन की हो निधी।।
यह भक्तिसुमन थाल है जयमाल का प्रभु जी।
अर्पण करूँ है भावना यात्रा करूँ सभी।।१२।।

दोहा

जन्मकल्याणक तीर्थ की, पूजन है सुखकार।
जो कर ले श्रद्धा सहित, वह हो भव से पार ।।१३।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मकल्याणकतीर्थक्षेत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.२

अयोध्या तीर्थ पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

अथ स्थापना

तर्ज-गोमटेश, जय गोमटेश.....

आदिनाथ, जय आदिनाथ, मम हृदय विराजो-२
हम यही भावना करते हैं।
भावना करते हैं, ऐसा आने वाला कल हो।
हो नगर नगर में प्रभु पूजा, सारी धरती भक्ति स्थल हो।।हम०।।१।।
युग की आदि में इन्द्रराज ने, नगरि अयोध्या रचवाई।
श्री नाभिराय मरुदेवि को पाकर, सारी जनता हरषाई।।
प्रभु आदिनाथ का जन्म याद कर, मेरा मन भी उज्ज्वल हो।।हम०।।२।।
श्री अजितनाथ अभिनंदन सुमती, जिन अनंत ने जन्म लिया।
इन्द्रों ने जिन शिशु को लेकर, मेरू गिरि पर अभिषेक किया।।
जिन जन्मभूमि का अर्चन कर, मेरा मन भी अति उज्ज्वल हो।।हम०।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथजन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक

तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

सरयूनदि का जल अति शीतल, पद्मपराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करें मनकंज खिला।।
जलधारा से पूजा करते, पावें उज्ज्वल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।१।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

केशर घिस कर्पूर मिलाया, भ्रमर पंक्तियां आन पड़ें।
तीर्थक्षेत्र पूजन से नशते, कर्मशत्रु भी बड़े बड़ें।।
चंदन से पूजा करते ही, पावें अविचल कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।२।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथ-तीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

चंद्र चन्द्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ायें भक्ती से।
अमृतकणसम निज समकित गुण, पायें अतिशय युक्ती से।।
अक्षत से जिनक्षेत्र पूजते, पावें अक्षय कीर्ति को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ के।।३।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीतिस्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

वर्ण वर्ण के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
काम व्यथा नश जाय क्षेत्र को, अर्पण कर नवलब्धि[1] मिले।।
पुष्पों से पूजा करते ही, पावें निजगुण कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।४।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, तीर्थक्षेत्र का यजन किये।।
चरु से पूजा करते ही जन, हरते क्षुध की भीति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।५।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तम नाश करे।
दीपक से आरति करते ही, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।
करें आरती भक्ति भाव से, पावें आतमज्योति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।६।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. क्षायिकज्ञान आदि नव क्षायिक लब्धियाँ। २. मलाई।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।
धूपघड़े में धूप जलाकर, अष्टकर्म को दग्ध करें।
निजआतम के भावकर्म मल, द्रव्यकर्म भी भस्म करें।।
धूप खेयकर पूजा करते, पावें सुरभित कीर्ति को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।७।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतम तीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।
फल अंगूर अनंनासादिक, सरस मधुर ले थाल भरे।
आत्म अतीन्द्रिय सुख इच्छुक हो, फल अर्पेबहु भक्ति भरे।।
फल से पूजा करते ही हम, पावें निजपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।८।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्रायमोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब शीश झुकायें, नगरि अयोध्या तीर्थ को।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।
वंदे जिनवरं-४।।
जल चंदन अक्षत माला चरु, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
केवल 'ज्ञानमती' पद हेतू, जिनपद पंकज अर्घ्य किया।।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा करते, पावें शिवपद तीर्थ को।।
जिनवर जन्मभूमि को जजतें, पावें आतमतीर्थ को।।९।।
वंदे जिनवरं-४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंत-नाथतीर्थंकरजन्मभूमिअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

सोरठा

सरयूनदि का नीर, कंचन झारी में भरा।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शं करे।।१०।।

शांतये शांतिधारा

वकुल कमल कल्हार, पुष्पांजलि करते यहाँ।
मिले सौख्य भंडार, यश सौरभ चहुंदिश भ्रमें।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

प्रत्येक अर्घ्य-(शंभु छंद)

(इति मंडलस्योपरि प्रथमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।)

आषाढ़ वदी दुतिया के जहाँ, कृतयुग का प्रथम महोत्सव था।
प्रभु ऋषभदेव के गर्भकल्याणक, का वह पहला उत्सव था।।
उस तीर्थ अयोध्या जी के प्रति, मेरा यह अर्घ्य समर्पण है।
हो गर्भवास दुख नाश मेरा, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत्र कृष्ण नवमी तिथि को, जहाँ ऋषभदेव का जन्म हुआ।
माता मरुदेवी का आंगन, एवं त्रिलोक भी धन्य हुआ।।
पितु नाभिराय ने जहाँ किमिच्छक, दान सभी को बाँटा था।
उस नगरि अयोध्या को वन्दूँ, जहाँ लगा देव का तांता था।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ चैत्र वदी नवमी को, नीलांजना नृत्य प्रभु ने देखा।
उसकी मृत्यु लख जीवन की, क्षणभंगुरता का क्षण देखा।।
वैरागी वृषभेश्वर ने जहाँ, जाकर दीक्षा धारण की थी।
वह तीर्थ प्रयाग प्रसिद्ध हुआ मैं पूजूँ मुझे मिले सिद्धी।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवदीक्षाकल्याणक पवित्रप्रयागतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि ग्यारस तिथि को, केवलज्ञान प्रभू ने प्राप्त किया।
तब पुरिमतालपुर में धनपति ने, समवसरण निर्माण किया।।
नृप वृषभसेन ने दीक्षा लेकर, गणधर का पद प्राप्त किया।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, वृषभेश्वर ने जहाँ ज्ञान लिया।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रपुरिमतालपुर[१]तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ का गर्भागम, कल्याणक हुआ अयोध्या में।
वदि ज्येष्ठ अमावस धनपति ने, बरसाये रत्न अयोध्या में।।
उस नगरी का अर्चन करने को, अर्घ्य सजाकर लाया हूँ।
तीर्थंकर की शाश्वत नगरी को, वन्दन करने आया हूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ अजितनाथ का जन्मकल्याण, मनाने इन्द्र सभी आये।
शुभ माघ शुक्ल दशमी तिथि को, त्रैलोक्य के प्राणी हरषाये।।
उस पावन भूमि अयोध्या का, अर्चन सबको सुखकारी है।
तीर्थंकर श्री अजितेश्वर के, चरणों में धोक हमारी है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उस नगरी का सुन्दर वैभव भी, नहीं लुभा पाया प्रभु को।
शुभ माघ शुक्ल नवमी के दिन, वैराग्य हुआ अजितेश्वर को।।
साकेतपुरी के बाग सहेतुक, में जाकर दीक्षाधारी।
उस त्यागभूमि को अर्घ्य चढ़ा, चरणों में जाऊँ बलिहारी।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१. आज इसको भी प्रयाग में ही माना जाता है।

साकेतपुरी में अजितनाथ का, केवलज्ञान कल्याणक है।
तिथि पौष शुक्ल ग्यारस का दिन, परमातमपद का ज्ञायक है।।
उस तीर्थ अयोध्या की रज में, पावनता सदा महकती है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ, ज्ञान की वर्षा जहाँ बरसती है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअजितनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख शुक्ल षष्ठी तिथि में, सिद्धार्था माँ के आँगन में।
साकेतपुरी में रत्न बरसते, पिता स्वयंवर के घर में।।
चौथे तीर्थंकर अभिनंदन, प्रभु का गर्भागम उत्सव था।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ अयोध्या, तीरथ सचमुच शाश्वत था।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिन का जन्म हुआ, तब इन्द्र सिंहासन डोल उठा।
तिथि माघ शुक्ल द्वादशि के दिन, तीनों लोकों में शोर मचा।।
रत्नों की वर्षा हुई पिता ने, दान किमिच्छक बांट दिया।
उस पुण्यभूमि को अर्घ्य चढ़ा, मैंने भी आनंद प्राप्त किया।।१०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस जगह प्रभू ने मेघों का, इक सुंदर नगर बसा देखा।
वैराग्य प्राप्त हो गया तुरत, जब वही नगर विनशा देखा।।
जग की नश्वरता लख वन में, जाकर दीक्षित हो गये प्रभो।
उस नगरि अयोध्या को पूजूं, हे अभिनन्दन जगवंद्य प्रभो।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयकार अयोध्या में गूंजी, जब पौष शुक्ल चौदश आई।
अभिनंदन प्रभु के तीर्थंकर, शुभ कर्म की प्रकृति उदय आई।।
धनपति ने समवसरण रचना, कर दी तुरंत गगनांगण में।
उस पावन भू को अर्घ्य चढ़ा, चाहूँ तीरथ का दर्शन मैं।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअभिनंदननाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला दुतिया तिथि में, जहाँ सुमतिनाथ जी गर्भ बसे।
जिस जगह मेघरथ राजा की रानी, को सोलह स्वप्न दिखे।।
पितु मात की पूजा करने को, तब इन्द्र सपरिकर थे आये।
उस गर्भकल्याणक भूमी की, पूजन कर हम सब हरषाये।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलावती माता ने जहाँ, प्रभु सुमतिनाथ को जन्म दिया।
तिथि चैत्र शुक्ल एकादशि ने, साकेतपुरी को धन्य किया।।
पर्वत सुमेरु पर ले जाकर, सौधर्म इन्द्र ने न्हवन किया।
उस जन्मभूमि को अर्घ्य चढ़ा, हम सबने पावन जनम किया।।१४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी नवमी को जहाँ, प्रभु सुमति को जातिस्मरण हुआ।
दीक्षा का भाव प्रगटते ही, लौकान्तिक सुर आगमन हुआ।।
उद्यान सहेतुक में जाकर, वस्त्राभरणों का त्याग किया।
उस त्यागभूमि को अर्घ्य चढ़ा, हमने सुख का साम्राज्य लिया।।१५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साकेतपुरी का वह उपवन, फिर से इक बार प्रफुल्लित था।
जहाँ चैत्र सुदी ग्यारस के दिन, कैवल्य दिवाकर प्रगटित था।।
उस ज्ञानकल्याणक के प्रतीक में, समवसरण निर्माण हुआ।
जो अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें, उनका सचमुच कल्याण हुआ।।१६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुमतिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदी एकम तिथि जहाँ, माँ श्यामा ने देखे सपने।
जिनवर अनंत का गर्भकल्याण, मनाने आये देव घने।।
नृप सिंहसेन साकेतपती ने, सपनों का फल बतलाया।
उस तीर्थ अयोध्या की पूजन को, थाल सजा कर मैं लाया।।१७।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथगर्भकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुण्डावसर्पिणी काल अयोध्या, नगरी का इतिहास बना।
यहाँ पाँच प्रभू के जन्म में, अन्तिम प्रभु अनंत का धाम बना।।
शुभ ज्येष्ठ वदी बारस तिथि को, सुर मुकुट स्वयं ही नम्र हुए।
उस पुण्य धरा को अर्घ्य चढ़ा, तीरथवन्दन के भाव हुए।।१८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथजन्मकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक बार देख उल्का गिरते, जिनवर अनंत ने दीक्षा ली।
निज जन्मतिथी में ही प्रभु ने, परिकर व प्रजा को शिक्षा दी।।
क्षणभंगुर इस मानव तन से, अविनश्वर पद को पाना है।
इसलिए त्यागमय धरती को, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाना है।।१९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर उसी अयोध्या में अनंत, तीर्थंकर प्रभु को ज्ञान मिला।
उग्रोग्र तपस्या के द्वारा, जहाँ समवसरण का धाम मिला।।
वह चैत्र अमावस्या का दिन, सबने दिव्यध्वनि पान किया।
आठों द्रव्यों का अर्घ्य चढ़ा, मैंने निज में विश्राम किया।।२०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअनंतनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रअयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जो नगरि अयोध्या तीर्थंकर की, शाश्वत जन्मभूमि मानी।
इस युग के पाँच जिनेश्वर के ही, जन्म से वह पावन मानी।।
सबके कल्याणक से पवित्र, साकेतपुरी का अर्चन है।
पूर्णार्घ्य समर्पण करके, तीर्थ व तीर्थंकर को वंदन है।।२१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथ-अनंतनाथादिपंचतीर्थंकरकल्याणक पवित्र अयोध्यातीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं अयोध्याजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीऋषभदेवाजिताभिनंदनसुमतिनाथानंतजिनेन्द्रेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छन्द

हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।
भक्ती से प्रभु के चरणों में, गुणमाल चढ़ाने आये हैं।।

है धन्य अयोध्यापुरी जहाँ, श्री आदिनाथ ने जन्म लिया।
जिन अजितनाथ अभिनंदन सुमती, प्रभु अनंत ने धन्य किया।।
कैलाशगिरी से वृषभदेव जिन, मोक्षधाम को पाये हैं।।हे०।।१।।

सम्राट् भरतचक्री ने दीक्षा ले, शिवपद को प्राप्त किया।
इक्ष्वाकुवंशि[१] नृप चौदह लाख हि, लगातार शिवधाम लिया।।
ये पुरी विनीता के जन्में, परमात्मधाम को पाये हैं।।
हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।।२।।

बाहुबलि कामदेव ने जीत, भरत को फिर दीक्षा धरके।
प्रभु एक वर्ष थे ध्यान लीन, तन बेल चढ़ी अहि भी लिपटे।।
फिर केवलज्ञानी बनें नाथ, हम गुण गाके हर्षाये हैं।।हे नाथ०।।३।।

श्री अजितनाथ आदिक चारों, तीर्थंकर सम्मेदाचल से।
शिवधाम गये इन्द्रादिवंद्य, हम नित वंदें, मन वच तन से।।
धनि धन्य अयोध्या जन्मस्थल, शिवथल वंदत हर्षाये हैं।।हे ०।।४।।

चक्रीश सगर आदिक यहाँ के, कर्मारि नाश शिव लिया अहो।
श्री रामचन्द्र ने इसी अयोध्या को, पावन कर दिया अहो।।
मांगीतुंगी से मोक्ष गये, इन वंदत पुण्य बढ़ाये हैं।।हे नाथ०।।५।।

युग की आदी में आदिनाथ, पुत्री ब्राह्मी सुंदरी हुई।
पितु से ब्राह्मी औ अंकलिपी, पाकर विद्या में धुरी हुई।।
पितु से दीक्षा ले गणिनी थीं, इनके गुण सुर नर गाये हैं।। हे०।।६।।

इनके पथ पर अगणित नारी, ने चलकर स्त्रीलिंग छेदा।
आर्यिका सुलोचना ने ग्यारह, अंगों को पढ़ जग संबोधा।।
दशरथ माँ पृथिवीमती आर्यिका, को हम शीश नमाये हैं।।हे०।।७।।

सीता ने अग्निपरीक्षा में, सरवर जल कमल खिलाया था।
पृथ्वीमति गणिनी से दीक्षित, आर्यिका बनी यश पाया था।।
श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण लवकुश, सब दुःखी हृदय गुण गाये हैं।। हे०।।८।।

---

१. अयोध्या में भरत को आदि लेकर चौदह लाख इक्ष्वाकुवंशीय राजा बिना व्यवधान के लगातार मोक्ष गये हैं। हरिवंश पु. सर्ग १३ श्लोक १३।

सीता ने बासठ वर्षों तक, बहु उग्र उग्र तप तप करके।
तैंतिस दिन सल्लेखना ग्रहण, करके सुसमाधि मरण करके।।
अच्युत दिव में होकर प्रतीन्द्र, रावण को बोध कराये हैं।।हे०।।९।।

जय जय रत्नों की खान रत्नगर्भा, रत्नों की प्रसवित्री।
जय जय साकेतापुरी अयोध्यापुरी, विनीता सुखदात्री।।
जय जयतु अनादिनिधन नगरी, हम वंदन कर हर्षाये हैं।।हे०।।१०।।

बस काल दोष से इस युग में, यहाँ पांच तीर्थंकर जन्म लिये।
सब भूत भविष्यत् कालों में, चौबिस जिन जन्मभूमि हैं ये।।
हम इसका शत शत वंदन कर, अतिशायी पुण्य कमाये हैं।।हे०।।११।।

जय जय तीर्थंकर भरत सगर, जय रामचन्द्र लव कुश गुणमणि।
जय जयतु आर्यिका ब्राह्मी माँ, सुंदरी व सीता साध्वीमणि।।
हम केवल 'ज्ञानमती' हेतू, तुम चरणों शीश झुकाये हैं।।हे ०।।१२।।

जय जयतु अयोध्या जिस निकटे, है टिकैतनगर जहाँ जन्म लिया।
जय जयतु आर्यिका रत्नमती, जिनने निज जीवन धन्य किया।।
ब्राह्मी माँ की पदधूलि बनूं, यह भाव हृदय लहराये हैं।
हे नाथ! आपके गुणमणि की, जयमाल गूंथ कर लाये हैं।।हे०।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीऋषभदेवअजितनाथअभिनंदननाथसुमतिनाथअनंतनाथ तीर्थंकर जन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं. ३

श्रावस्ती तीर्थ पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

श्री संभव जिन के जन्मकल्याणक, से पावन श्रावस्ती है।
जहाँ मात सुषेणा के आँगन में, हुई रत्न की वृष्टी है।।
उस श्रावस्ती तीरथ की पूजन, करके पुण्य कमाना है।
आह्वानन स्थापन करके, आत्मा में तीर्थ बसाना है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमि श्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री संभवनाथ जन्मभूमि श्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री संभवनाथ जन्मभूमि श्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (नंदीश्वर पूजा की चाल)

कंचन झारी में नीर, लेकर धार करूँ।
हो जाऊँ भवदधि तीर, ऐसे भाव करूँ।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कर्पूर मिलाय, घिस कर लाऊँ मैं।
संसार ताप मिट जाय, शांति पाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय संसार-तापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्वल धौत, तंदुल लाया मैं।
अक्षयपद प्राप्ती हेतु, पुंज चढ़ाया है।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति भाँति के फूल, माला गूंथ लिया।
नश जायं काम के शूल, प्रभु पद पूज लिया।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य थाल भर लाय, निकट चढ़ाऊँ मैं।
मम क्षुधारोग नश जाय, निज गुण पाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति जलाय, आरति करना है।
मम मोह नष्ट हो जाय, निज गुण वरना है।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर गंध सुगंधित धूप, अग्नी में ज्वालूँ।
मिल जावे सौख्य अनूप, कर्म अरी ज्वालूँ।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम, फल को लाऊँ मैं।
हो आतम में विश्राम, अतः चढ़ाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
''चन्दना'' धूप फल युक्त, तीरथ अर्घ्य दिया।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथ जन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद

जिस तीर्थ की पवित्रता स्वयं प्रसिद्ध है।
उसके लिए जलधार तो बस इक निमित्त है।।
आत्मा में शांति एवं जग भर में शांति हो।
त्रयधार देके तीन रत्न मुझको प्राप्त हों।।

शांतये शांतिधारा

फूलों के जिस उद्यान में संभव प्रभू खेले।
उद्यान वह साक्षात् नहिं श्रावस्ती में भले।।
लेकिन वही संकल्प तुच्छ पुष्पों में किया।
पुष्पांजली के द्वारा भक्ति को प्रगट किया।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि द्वितीयदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छंद)

फाल्गुन सुदि अष्टमि को जहाँ पर, माता को सोलह स्वप्न दिखे।
दृढ़रथ राजा ने बतलाया, तुम गर्भ में श्रीजिनराज बसे।।
श्रावस्ती में उससे छह महिने, पहले रत्न बरसते थे।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ उसको यहाँ, आने को इन्द्र तरसते थे।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथगर्भकल्याणक पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि पूनो को जहाँ पर, संभव जिनवर का जन्म हुआ।
दृढ़रथ पितु मात सुषेणा के संग, जहाँ का कण-कण धन्य हुआ।।
पितु दान किमिच्छक बाँट रहे, थे जहाँ पुत्र-जन्मोत्सव पर।
उस जन्मकल्याणक से पवित्र, श्रावस्ती की पूजा रुचिकर।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मकल्याणक पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ब्याह किया औ राज्य किया , बहुतेक समय संभवप्रभु ने।
फिर मेघ विघटते देख वहीं, वैराग्य भाव धारा प्रभु ने।।
श्रावस्ती में उस मगशिर पूनो, को लौकांतिक सुर आये।
दीक्षा कल्याणक से पवित्र, श्रावस्ती के हम गुण गायें।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावस्ती में तपकर के संभव, जिन को केवलज्ञान हुआ।
उद्यान सहेतुक में शाल्मलि, तरु नीचे प्रगटित ज्ञान हुआ।।
मगशिर वदि चौथ तिथी को जहाँ पर, अधर बना था समवसरण।
उस पावन समवसरण भूमी को, अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रश्रावस्ती तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
श्रावस्ती को अर्घ्य दे, चाहूँ आतमज्ञान।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथगर्भजन्मतपज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रावस्ती जन्मभूमि पवित्रीकृत श्री संभवनाथ जिनेन्द्रायनमः।

जयमाला

शंभु छन्द

जय जय तीर्थंकर संभवप्रभु की, जन्मभूमि मंगलकारी।
जय जय श्रावस्ती नगरी की, देवोपुनीत महिमा भारी।।
सौधर्म इन्द्र जिस नगरी की, त्रय प्रदक्षिणा कर आया था।
अपने संग में शचि इन्द्राणी एवं परिकर बहु लाया था।।१।।
जब गर्भ में तीर्थंकर आये, तब उत्सव गर्भकल्याण किया।
पितु माता की पूजा करके, वस्त्रादिक से सम्मान किया।।
श्री ह्री धृति आदि देवियों को, माता की सेवा में लाये।
त्रैलोक्यपती के जनक और जननी के गुण गा हरषाये।।२।।
जब जन्म लिया तीर्थंकर ने, तब श्रावस्ती का क्या कहना।
वहाँ का हर कण रोमांचित था, फिर मात पिता का क्या कहना।।

स्वर्णिम शरीर की आभा को, दो नेत्र से इन्द्र न देख सका।
तब सहस नेत्र कर देख-देख, वह प्रभु दर्शन कर नहीं थका।।३।।

जन्मोत्सव मेरुसुदर्शन पर, कर श्रावस्ती प्रभु को लाये।
वहाँ पुनः प्रभू का जन्मोत्सव, लख पुरवासी भी हरषाये।।
श्रावस्ती के हर घर में संभव-नाथ प्रभू की चर्चा थी।
हर नगर गली औ शहरों में, संभवजिन की ही अर्चा थी।।४।।

तीर्थंकर क्रम में सभी जानते, अश्वचिन्ह से संभव को।
संभव जिन तीर्थंकर बनकर, करते थे कार्य असंभव को।।
भोजन न किया श्रावस्ती का, दीक्षा से पहले जिनवर ने।
दीक्षा लेकर आहार हेतु, चर्या करते थे घर-घर वे।।५।।

संभव के चार कल्याणक से, पावन श्रावस्ती नगरी है।
उनके निर्वाणकल्याणक से, पावन सम्मेदशिखर गिरि है।।
अब यहाँ मुख्यतः जन्मभूमि, अर्चन का भाव बनाया है।
उसके माध्यम से और सभी, कल्याणक का क्रम आया है।।६।।

शब्दों में शक्ति नहीं प्रभु जी, बस भाव तीर्थ पूजन का है।
''चन्दनामती'' तीरथ गाथा, कहने को शब्द भला क्या हैं।।
इन्द्रों मुनियों से वंद्य जन्म, नगरी को वन्दन करना है।
श्रावस्ती नगरी के प्रति यह, जयमाल समर्पित करना है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द- **जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।**
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं. ४

कौशाम्बी तीर्थ पूजा

तर्ज- आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं.....

पदमचिन्ह युत पदमप्रभू की, जन्मभूमि वन्दना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।टेक.।।

कौशाम्बी में धरणराज की, रानी एक सुसीमा थीं।
जिनके सुख वैभव की धरती, पर नहिं कोई सीमा थी।।
इन्द्रों द्वारा पूज्य वहाँ की, पावन रज वन्दना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।१।।

चार कल्याणक पदमप्रभू के, इन्द्र ने यहीं मनाये हैं।
हम उनकी पूजा हेतु, आह्वानन करने आये हैं।।
यमुना तट पर बसे तीर्थ की, मुनिगण भी वंदना करें।
कौशाम्बी शुभ तीर्थ ऐतिहासिक, की हम अर्चना करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमि कौशाम्बी तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक- (शंभु छन्द)

जब-जब काया पर मैल चढ़ा, मैंने जल से स्नान किया।
निज मन का मैल हटाने को, तीरथ के लिए प्रस्थान किया।।
कौशाम्बी नगरी पद्मप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब दुर्गन्ध मिली मुझको, मैं द्रव्य सुगंधित ले आया।
अब आत्मसुगंधी पाने को, चन्दन मलयागिरि घिस लाया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जब मुझ पर संकट आया, मैंने कुदेव की शरण लिया।
अब ज्ञान मिला तो अक्षत ले, अक्षय पद हेतु समर्प्य दिया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब विषयों की आश जगी, भोगों में सुख मैंने माना।
अब ज्ञान मिला तो पुष्पों से, प्रभु पूजन करने को ठाना।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब काया को भूख लगी, स्वादिष्ट सरस व्यंजन खाया।
अब ज्ञान हुआ तो व्यंजन का, भर थाल अर्चना को लाया।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब देखा कुछ अंधकार, विद्युत प्रकाश को कर डाला।
अब जाना प्रभु आरति करके, मिलता है अन्तर उजियाला।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब निद्रा मैंने चाही, कमरे में धूप जलाया है।
अब जाना असली तथ्य अतः, पूजन में उसे चढ़ाया है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब कोई भी फल देखा, खाने की इच्छा प्रबल हुई।
अब जाना तथ्य मोक्ष फल का, तो पूजन इच्छा प्रबल हुई।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जब-जब मैंने आठों द्रव्यों का, स्वर्णिम थाल सजाया है।
तब-तब मैंने ''चन्दनामती'', लोकोत्तर वैभव पाया है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

यूँ तो जल कितना बहता है, उसकी नहिं कुछ सार्थकता है।
पूजन में प्रासुक जल से, जलधारा की ही सार्थकता है।।
कौशाम्बी नगरी पदमप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।

शांतये शांतिधारा

यूँ तो उपवन में फूल, बहुत गिरते मुरझाते रहते हैं।
प्रभु सम्मुख पुष्पांजलि करके, उनके भी भाग्य निखरते हैं।।
कौशाम्बी नगरी पद्मप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।

दिव्य पुष्पांजलिः

प्रत्येक अर्घ्य (शेर छन्द)

(इति मंडलस्योपरि तृतीयदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जहाँ माघ कृष्णा छठ गरभ कल्याण हुआ था।
माता सुसीमा को हरष अपार हुआ था।।
राजा धरण की नगरी में इन्द्र थे आये।
उस तीर्थ कौशाम्बी को सभी अर्घ्य चढ़ायें।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभगर्भकल्याणक पवित्रकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदी तेरस को जहाँ प्रभु जनम हुआ।
इन्द्राणी ने प्रसूतिगृह में जा दरश किया।।
सुरपति ने प्रभु को गोद में ले नृत्य था किया।
उस जन्मभूमि के लिए अब अर्घ्य मैं दिया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मकल्याणक पवित्रकौशाम्बी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जातिस्मरण से प्रभु जहाँ विरक्त हुए थे।
कार्तिक वदी तेरस को वे निवृत्त हुए थे।।
कौशाम्बि में प्रभासगिरि पे दीक्षा ले लिया।
अतएव अर्घ्य मैंने तीर्थ को चढ़ा दिया।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभदीक्षाकल्याणक पवित्रकौशाम्बी-अन्तर्गतप्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तप कर जहाँ प्रभु घातिया कर्मों को नशाया।
शुभ चैत्र सुदि पूनम तिथी कैवल्य को पाया।।
धनपति ने आ तुरन्त समवसरण बनाया।
अतएव पभौषा को मैंने अर्घ्य चढ़ाया।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रकौशाम्बी-अन्तर्गतप्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य दोहा

चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
कौशाम्बी व प्रभासगिरि, को दूँ अर्घ्य महान।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभगर्भजन्मतपज्ञान चतुःकल्याणक पवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरि तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं कौशाम्बी जन्मभूमि पवित्रीकृत श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

तीर्थ का अर्चन करना है-२,
श्री पद्मप्रभ की जन्मभूमि कौशाम्बी को भजना है।।
तीर्थ का.।।टेक०।।

नौका सम जो प्राणी को, भवदधि से पार लगाते।
इस धरती पर वे स्थल, ही पावन तीर्थ कहाते।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।१।।

मिश्री से मिश्रित आटा, मीठा जैसे हो जाता।
तीर्थंकर कल्याणक से, वैसे ही तीर्थ बन जाता।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।२।।

तीर्थों की इस श्रेणी में, कौशाम्बी तीर्थ है पावन।
तीर्थंकर पद्मप्रभू की, वह जन्मभूमि मनभावन।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।३।।

प्रारंभिक चार कल्याणक, पद्मप्रभु के माने हैं।
वहीं पास पपौसा तीरथ पे, तप व ज्ञान माने हैं।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।४।।

महावीर प्रभू भी आये, थे कौशाम्बी नगरी में।
आहार दिया था जहाँ पर, उनको चन्दना सती ने।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।५।।

यह अर्घ्य थाल अर्पित है, कौशाम्बी तीर्थ चरण में।
आत्मा को तीर्थ बनाने, का भाव मेरे है मन में।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।६।।

कौशाम्बी एवं उसके, नजदीक प्रभाषगिरी है।
''चन्दनामती'' दोनों ही, कल्याणक पूज्य मही हैं।।
तीर्थ का अर्चन करना है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजन्मभूमिकौशाम्बीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं. ५

वाराणसी तीर्थ पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

जिस वाराणसि नगरी का हमने, नाम सुना है ग्रंथों में।
जो पावन और पवित्र सुपारस, पार्श्वनाथ के चरणों से।।
उस जन्मभूमि तीरथ की पूजन, हेतु करूँ आह्वानन मैं।
स्थापन सन्निधिकरण करूँ, वाराणसि तीर्थ का अर्चन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छंद)

हे नाथ! विषयसुख की इच्छा में, मैंने निज को भरमाया।
लेकिन दुःखों की वैतरणी में, किंचित् भी सुख नहिं पाया।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधाग्नी में जलकर अब तक, अपना सर्वस्व लुटाया है।
अब चंदन से पूजा करने का, भाव हृदय में आया है।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि की पहचान बिना, जड़ को आत्मा मैंने माना।
पूजन में अक्षत पुंज चढ़ा, अब चाहूँ अक्षय पद पाना।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं कामभोग की मदिरा से, अब तक मतवाला बना रहा।
उसकी संतृप्ति हेतू मैं, अब पुष्पमाल को चढ़ा रहा।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा रोग की ज्वाला से, भव भव में जलता आया हूँ।
उस ज्वाला की उपशांति हेतु, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्री सुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में पड़ा-पड़ा, संसार में ही परिभ्रमण किया।
वह मोह दूर करने हेतू, दीपक का अब अवलंब लिया।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का इस आत्मा के संग, बंधन अनादि से चला किया।
उस बन्धन से मुक्ती हेतू, मैं धूप अग्नि में जला दिया।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इतने फल भव-भव में खाये, उसका फल क्या पाया मैंने।
उत्तम शिवफल की आश में अब, फल थाल चढ़ाया है मैंने।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक अभिलाषाओं में, नहिं पद अनर्घ्य पहचान सका।
''चन्दनामती'' अब अर्घ्य लिये, किंचित् उस पद को जान सका।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमि वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गंगनदी का नीर ले, करूँ तीर्थ पर धार।
आत्मा भी निर्मल बने, पाऊँ शांति अपार।।

शांतये शांतिधारा

वाराणसि उद्यान के, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, वाराणसि के माँहि।।

दिव्य पुष्पांजलिः

प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छंद)

(इति मंडलस्योपरि चतुर्थदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

भादों सुदि षष्ठी को जहाँ गर्भ, कल्याणक हुआ सुपारस का।
इन्द्रों ने तब उत्सव कीना, जिनवर के गर्भकल्याणक का।।
राजा सुप्रतिष्ठ की रानी पृथ्वी-षेणा भी तब पूज्य बनी।
उस गर्भागम से पावन नगरी, वाराणसि भी वंद्य घनी।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथगर्भकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्येष्ठ सुदी बारस तिथि में, जहाँ श्रीसुपार्श्व ने जन्म लिया।
उन जन्मकल्याणक घड़ियों ने, वाराणसि नगरी धन्य किया।।
स्वर्गों में वाद्य स्वयं बाजे, इन्द्रासन भी कम्पा उस क्षण।
उस जन्मभूमि वाराणसि की, अर्चना किया करते सुरगण।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथजन्मकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उपवन में ही, जिनवर सुपार्श्व ने दीक्षा ली।
ऋतु परिवर्तन लख हो विरक्त, मोही परिजन को शिक्षा दी।।
वह तिथि भी ज्येष्ठ सुदी बारस, जब दीक्षा स्वयं लिया प्रभु ने।
दीक्षाकल्याणक से पवित्र, नगरी को अर्घ्य दिया मैंने।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उद्यान सहेतुक, में शिरीष तरु के नीचे।
फाल्गुन वदि छट्ठ तिथी को केवल-ज्ञान प्राप्त किया जिनवर ने।।
घाती कर्मों का कर विनाश, शुभ समवसरण लक्ष्मी पाया।
मैं इसीलिए वाराणसि तीरथ, की पूजन करने आया।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रवाराणसी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

फिर बाद करोड़ों वर्ष जहाँ, प्रभु पार्श्वनाथ इतिहास चला।
वैशाख कृष्ण दुतिया को गर्भ-कल्याणक उत्सव वहाँ मना।।
पितु अश्वसेन माता वामा के, महलों में सुरगण आये।
उस पावन तीर्थ बनारस को, हम अर्घ्य चढ़ाकर हरषाये।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथगर्भकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष कृष्ण ग्यारस को, पारसनाथ जहाँ पर जन्मे थे।
मेरूपर्वत की पांडुशिला पर, अभिषव किया था इन्द्रों ने।।
उस जन्मकल्याणक से पावन, नगरी को अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं।
वाराणसि तीरथ है प्रसिद्ध, उसकी गुणगाथा गाऊँ मैं।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजन्मकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ऋषभदेव गुणगाथा सुन, पारसप्रभु को वैराग्य हुआ।
तिथि पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राजपाट सब त्याग दिया।।
उन बालब्रह्मचारी प्रभु के, चरणों में शीश झुका मेरा।
उनकी दीक्षाभूमी वाराणसि, को है कोटि नमन मेरा।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जब पार्श्वनाथ भगवान ध्यान में, लीन तपस्या में रत थे।
उपसर्ग किया तब पूर्व जन्म के, बैरी उस कमठासुर ने।।
धरणेंद्र और पद्मावती ने, उपसर्ग प्रभू का दूर किया।।
हुआ केवलज्ञान जहाँ प्रभु को, अहिच्छत्र तीर्थ वह पूज्य हुआ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथ केवलज्ञानकल्याणक पवित्रअहिच्छत्रतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जिनवर सुपार्श्व अरू पार्श्वनाथ के, कल्याणक से पावन जो।
उनके प्राचीन कथानक से, है प्रसिद्ध तीर्थ बनारस वो।।
उस तीरथ से प्रार्थना मेरी, आत्मा भी तीरथ बन जावे।
मैं पूर्ण अर्घ्य अर्पित करता, मुझको अनर्घ्य पद मिल जावे।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथगर्भजन्मादिकल्याणक पवित्र-वाराणसि तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं वाराणसीजन्मभूमि पवित्रीकृत श्रीसुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ जिनेन्द्राभ्यां नमः।

जयमाला

(शंभु छंद)

शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।
प्रभु श्रीसुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ की, जन्मभूमि को सदा नमन।।टेक.।।
तीर्थंकर श्री वृषभेश्वर की, आज्ञा से बसी नगरियाँ थीं।
उनमें से ही प्रसिद्ध वाराणसि, आदि कई नगरियाँ थीं।।
यहाँ प्रथम आदि तीर्थंकर के, चलते रहते थे सदा भजन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।१।।
जब-जब स्वर्गों से च्युत होकर, तीर्थंकर यहाँ जनमते थे।
तब-तब धनपति आकर रुचि से, बहुमूल्य रत्न बरसाते थे।।
माता की सेवा करके अष्ट, कुमारी होती थीं प्रसन्न।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।२।।
दो बार हुई पन्द्रह-पन्द्रह, महिने तक यहाँ रतन वर्षा।
सौधर्म इन्द्र इक सहस नेत्र से, प्रभु को देख-देख हर्षा।।
मेरूपर्वत की पाण्डुशिला पर, किया प्रभू का जन्म न्हवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।३।।

भगवान जहाँ खेले एवं, स्वर्गों का भोजन किया जहाँ।
तीर्थंकर श्रीसुपार्श्व जिन ने, राजा बन राज्य किया था जहाँ।।
युवराज पार्श्व ने दीक्षा ली, स्वयमेव बालब्रह्मचारी बन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।४।।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, पारस सुपार्श्व द्वय तीर्थंकर।
उपसर्ग हुआ अहिछत्र में, केवलज्ञान लहा पारस जिनवर।।
तीर्थंकर प्रभु की पदरज से, धरती बन जाती नन्दनवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।५।।
है वर्तमान में वाराणसि का, क्षेत्र भदैनी सुखकारी।
वह प्रभु सुपार्श्व की जन्मभूमि, मानी जाती मंगलकारी।।
भेलूपुर पारसनाथ जिनेश्वर, का कहलाता जन्मस्थल।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।६।।
यह अर्घ्यथाल स्वीकार करो, आठों द्रव्यों से युक्त मेरा।
यह शब्दमाल स्वीकार करो, गुणवर्णन से संयुक्त मेरा।।
यह भक्तिमाल स्वीकार करो, भावों से मैं करता अर्चन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।७।।
जन्मभूमि वाराणसी, है जग में सुप्रसिद्ध।
नमन ''चन्दनामती'' सदा, पूजन का है लक्ष्य।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द-**जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।**
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चंदना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं. ६

श्री चन्द्रपुरी तीर्थ पूजा

(स्थापना)

शंभु छन्द

अष्टम तीर्थंकर चन्द्रप्रभू की, जन्मभूमि है चन्द्रपुरी।
गर्भागम से केवलज्ञानी, बनने तक पावन हुई मही।।
उस चन्द्रपुरी तीरथ की पूजन, से पहले आह्वानन है।
स्थापन सन्निधिकरण सहित, जन्मस्थल का आराधन है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छन्द)

जग में कुछ सुख है कुछ दुख है, मैंने तो अब तक यह जाना।
लेकिन यह भ्रम है गुरु कहते, जग में केवल दुख ही माना।।
निज जन्ममरण के नाश हेतु, पूजन में जल की धार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को वन्दन बारम्बार करूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन अरु चंद्रकिरण मोती, गंगाजल यद्यपि शीतल हैं।
लेकिन जिनवर के पुण्यवचन, इस जग में शाश्वत शीतल हैं।।
पूजन में चन्दन चर्चन कर, संसार ताप को शांत करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

छहखंडाधिप चक्री का भी, नहिं पद अक्षय रह पाया है।
बस मात्र अमूर्तिक आत्मा का, क्षय कभी न होने पाया है।।
उस आतम सुख की प्राप्ति हेतु, पूजन में अक्षत थाल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यूँ तो पञ्चेन्द्रिय विषयों का, तीर्थंकर भी उपभोग करें।
पर उनको नश्वर समझ शीघ्र ही, उन्हें त्याग कर मोक्ष वरें।।
निज कामबाण विध्वंस हेतु, पूजन में पुष्प की माल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वंदन बारम्बार करूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हो कल्पवृक्ष का भोजन चाहे, शाश्वत तृप्ति न देता है।
वह तो खाते-खाते भी सबकी, क्षुधा वृद्धि कर देता है।।
शुद्धातम की संतृप्ति हेतु, पूजन में व्यंजन थाल भरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वंदन बारम्बार करूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो रत्नदीप या घृतदीपक, सबका प्रकाश क्षणभंगुर है।
केवल आत्मा का ज्ञानदीप, देता प्रकाश अविनश्वर है।।
मोहान्धकार के नाश हेतु, पूजन में दीपक थाल धरूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शारीरिक सुख की प्राप्ति हेतु, जलती है धूप सभी घर में।
लेकिन उससे नहिं कर्मनाश, होते वह तो भव वृद्धि करें।।

उन कर्मों के विध्वंस हेतु, अग्नी में धूप प्रजाल करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वंदन बारम्बार करूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की संपुष्टी हेतु न जाने, कितने फल खाए जाते।
लेकिन मन की संपुष्टि हेतु, वे फल भी कार्य न कर पाते।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, पूजन में फल का थाल भरूँ।
श्री चन्द्रप्रभु की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर प्रभु ने तप करके, जिस अष्टम वसुधा को पाया।
उसको पाने के लिए ''चन्दनामती'', अर्घ्य मैं ले आया।।
आत्मा को पूज्य बनाने हेतू, अष्टद्रव्य का थाल भरूँ।
श्री चन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभुजन्मभूमि चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय की प्राप्ती हेतू, त्रयधारा जल की मैं डालूँ।
निज आत्मा की शांती हेतू, शांतीधारा मैं कर डालूँ।।
पुर राज्य राष्ट्र की शांति हेतु, झारी से शांतीधार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।१०।।

शान्तये शांतिधारा

जीवन को पुष्पित करने का, शुभ भाव हृदय में आया है।
बस इसीलिए तीरथ पर, पुष्पांजलि करना मन भाया है।।
धरती का अंचल सजा रहे, पुष्पों का रंग अपार करूँ।
श्रीचन्द्रप्रभू की चन्द्रपुरी को, वन्दन बारम्बार करूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि पंचमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य

जहाँ चैत्र वदी पंचमि तिथि को, चन्द्रप्रभ गर्भ पधारे थे।
लक्ष्मणा मात महासेन पिता सह, धन्य सभी जग वाले थे।।
उस गर्भकल्याणक की नगरी, शुभ चन्द्रपुरी अतिप्यारी है।
गंगा तट बसी हुई नगरी को, पूजूँ वह सुखकारी है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभगर्भकल्याणक पवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जिन महलों में चन्द्रप्रभ ने, तीर्थंकर बनकर जन्म लिया।
तिथि पौष कृष्ण एकादशि को भी, अपने जन्म से धन्य किया।।
उस नगरी में अद्यावधि भी, प्राचीन एक जिनमंदिर है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर चन्द्रपुरी को, पाऊँ पद अतिसुन्दर है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मकल्याणक पवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण में मुख लखकर जहाँ श्री, चन्द्रप्रभ को वैराग्य हुआ।
वदि पौष इकादशि को जहाँ जिनवर, को दीक्षा से राग हुआ।।
जिस नगरी का सर्वर्तुक वन भी, प्रभु दीक्षा से था पावन।
उस चन्द्रपुरी को अर्घ्य चढ़ा, मेरा खिल जावे मन उपवन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभदीक्षाकल्याणक पवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

उस चन्द्रपुरी के सर्वर्तुक वन, में ही केवलज्ञान हुआ।
फाल्गुन वदि सप्तमि तिथि को जहाँ पर, समवसरण निर्माण हुआ।।
श्रीचन्द्रप्रभ की ज्ञानकल्याणक, भूमि को शत-शत वंदन।
मस्तक पर पावन धूलि चढ़ा, मैं अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चन्द्रप्रभ जी के चार कल्याणक, से पवित्र जो नगरी है।
चिरकाल बीत जाने पर वह, वीरान हो गई नगरी है।।

लेकिन उसकी रज लेने को, सब भक्त आज भी आते हैं।
उस तीरथ के पावन चरणों में, हम भी अर्घ्य चढ़ाते हैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभगर्भजन्मदीक्षाज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रचन्द्र-पुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं चन्द्रपुरी जन्मभूमि पवित्रीकृत श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-मनिहारों का वेष बनाया.....

मैंने पूजन का थाल सजाया,
पूजा करने का भाव है आया।।टेक.।।
गंगा यमुना नहाना ही तीरथ नहीं,
मन को पावन बनाना है तीरथ सही।
सत्य का पंथ अब अपनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।१।।
धूनी भस्म रमाना न तप है सही,
मन को निज वश में लाना ही तप है सही।
वही पथ मैंने अब अपनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।२।।
मिथ्या भावों का जप-तप सभी व्यर्थ है,
क्रिया सम्यक्त्वयुत तप में ही अर्थ है।
वही सम्यक्त्व अब मैंने पाया,
पूजा करने का भाव है आया।।३।।
भव जलधि से जो तिरवाते वे तीर्थ हैं,
उनमें ही चन्द्रपुरि की अमर कीर्ति है।
चन्द्रप्रभ ने जनम जहाँ पाया,
पूजा करने का भाव है आया।।४।।
गर्भ जन्म व तप ज्ञान चारों हुए,
जहाँ पर कार्य उत्तम हजारों हुए।

उसका गुणगान अब मैंने गाया,
पूजा करने का भाव है आया।।५।।
पूज्यता उसके कण-कण में है आज भी,
जैन संस्कृति का पावन है इतिहास भी।
वही इतिहास मैंने भी गाया,
पूजा करने का भाव है आया।।६।।
स्वर्णथाली में पूजन की सामग्री है,
अर्घ्य के संग मिली उसमें मणियाँ भी हैं।
आठों द्रव्यों को क्रम से सजाया,
पूजा करने का भाव है आया।।७।।
मोक्ष सम्मेदगिरि से प्रभू ने लहा,
चन्द्रप्रभ टोंक अब भी बना है वहाँ।
उसका भी संस्मरण आज आया,
पूजा करने का भाव है आया।।८।।
अर्चना हो सफल तीर्थ बन पाऊँ मैं,
''चन्दनामति'' निजातम में रम जाऊँ मैं।
भाव मैंने ये मन में बनाया,
पूजा करने का भाव है आया।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीचन्द्रप्रभजन्मभूमिचन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं. ७

काकन्दी तीर्थ पूजा

(स्थापना)

तर्ज–आओ बच्चों.....

चलो चलें काकन्दी नगरी, पुष्पदन्त को नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-२।।टेक.।।

चौबिस तीर्थंकर में से, श्रीपुष्पदन्त नवमें प्रभु हैं।
उनसे काकन्दी नगरी ने, प्राप्त किया वैभव सब है।।
इन्द्र मनुज भी आकर जिस, तीरथ को शत-शत नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-२।।१।।

आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण, विधी हम करते हैं।
पूजन में काकन्दी नगरी, का स्थापन करते हैं।।
आत्मशक्ति प्रगटाने हेतु, तीर्थक्षेत्र का यजन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-२।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (स्रग्विणी छंद)

स्वर्ण भृंगार में क्षीर सम नीर ले।
धार डालूँ तो मिट जाय भव पीर है।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस के चन्दन मलयगिरि का लाया प्रभो।
भव का संताप मैंने नशाया विभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि के पुंज से नाथ पूजा करूँ।
पूर्ण आनंदमय आत्मसुख को वरूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा जूही चंपा चमेली कुसुम ।
तीर्थ पद में चढ़ा कर लहूँ पद विमल।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वसंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियां लाडुओं से भरा थाल है।
रोग क्षुध नाश हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीपक की ज्योति जलाई प्रभो।
स्वर्ण थाली में आरति सजाई प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्निघट में जलाऊँ प्रभो।
कर्म की धूम्र चहुँदिश उड़ाऊँ प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनंनास नींबू नरंगी लिया।
मोक्षफल आश से नाथ अर्पित किया।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि युत अर्घ्य अर्पण करूँ।
''चन्दना'' अर्घ्य प्रभु पद समर्पण करूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुःख रंच ना।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेरछन्द

गंगानदी के नीर से त्रयधार करूँ मैं।
त्रयरत्न प्राप्ति हेतु शांतिधार करूँ मैं।।

शांतये शांतिधारा

नाना तरह के पुष्प अंजुली में भर लिया।
पुष्पांजली कर मैंने आत्मसौख्य वर लिया।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि षष्ठदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (शेर छन्द)

फाल्गुन वदी नवमी जहाँ प्रभु गर्भ में आये।
काकन्दी में जयरामा माँ को स्वप्न दिखाये।।
उस गर्भकल्याणक से पूज्य भूमि को वन्दूँ।
काकन्दी को मैं अर्घ्य चढ़ा दुःख को खंडूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भकल्याणक पवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम को जन्म पुष्पदंत का।
काकन्दी में हुआ था जब त्रैलोक्य धन्य था।।
उस जन्मकल्याणक पवित्र तीर्थ को नमूँ।
कर अर्घ्य समर्पण प्रभू तीर्थेश को प्रणमूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मकल्याणक पवित्र काकन्दीतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम जहाँ वैराग्य हुआ था।
श्री पुष्पदंत जिनवर ने त्याग लिया था।।
काकन्दी का वह पुष्पक वन हो गया पावन।
उस तीर्थ को ही मेरा यह अर्घ्य समर्पण।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदी दुतिया को जहाँ ज्ञान हुआ था।
जिनवर समवसरण का निर्माण हुआ था।।
काकन्दि उस पवित्र धरा को नमन करूँ।
मैं अर्घ्य चढ़ा घाति कर्म को हनन करूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र-काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शेरछंद)

श्रीपुष्पदंत जिनवर के चार कल्याणक।
सम्मेदगिरि से मोक्ष गये उनको नमूं नित।।
उन गर्भ जन्म तप व ज्ञान भूमि को जजूँ।
काकन्दि को पूर्णार्घ्य दे निज आत्मा भजूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भजन्मदीक्षाज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं काकन्दीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

(गीताछन्द)

जय तीर्थ काकन्दी जगत में, जन्मभूमि जिनेन्द्र की।
जय चार कल्याणक धरा वह, पुष्पदन्त जिनेन्द्र की।।
जय मात जयरामा व पितु, सुग्रीव का शासन जहाँ।
जयवंत हो त्रैलोक्यपूज्य, जिनेन्द्र का शासन जहाँ।।१।।

शुभ स्वर्ग प्राणत का सुखी, जीवन व्यतीत किया प्रभो।
प्रकृती जो तीर्थंकर बंधी थी, उसकी थी महिमा प्रभो।।
माँ के गरभ में आने से, छह माह पहले से हुई।
काकन्दि नगरी में धनद, द्वारा रतन वर्षा हुई।।२।।

रोमांच होता है हृदय में, जन्म का क्षण सोचकर।
जब स्वर्ग पूरा आ गया था, इस धरा पर भक्तिवश।।
सौधर्म सुरपति की शची, इन्द्राणी का सौभाग्य था।
जिसने प्रसूतिगृह में जा, पहले किया प्रभुदर्श था।।३।।

मायामयी बालक को रख, माँ को किया निद्रामगन।
गोदी में लाकर जिनशिशू को, कर लिया जीवन सफल।।
फिर इन्द्र ने जिनराज दर्शन, हेतु नेत्र सहस किया।।
मेरू शिखर पर जा प्रभू के, जन्म का उत्सव किया।।४।।

भारत की ही धरती का यह, इतिहास पौराणिक रहा।
त्रेसठ शलाका पुरुषों का, जिसने कथानक है कहा।।
जहाँ विश्वमैत्री का सदा, संदेश देते ऋषि मुनी।
उस देश में ही जिनवरों के, जन्म की महिमा सुनी।।५।।

तीर्थंकरों की श्रेणि में, श्रीपुष्पदंत नवम कहे।
उनके जनम से धन्य, काकन्दीपुरी के नृप रहे।।
बीते करोड़ों वर्ष फिर भी, वह धरा तो पूज्य है।
पूजी सदा जाती रहेगी, उस धरा की धूल है।।६।।

जहाँ देख उल्कापात प्रभु, वैरागि बनकर चल दिये।
साम्राज्य और कुटुम्ब को, समझा क्षणिक सब तज दिये।।
दीक्षा लिया तप कर जहाँ, कैवल्यज्ञान प्रगट किया।
उस पुण्यथान जिनेन्द्र भूमी, का सदा अर्चन किया।।७।।

जयमाल में पूर्णार्घ्य का, यह थाल अर्पित कर दिया।
गुणमाल में निज आत्म का, उद्गार प्रगटित कर दिया।।
स्वीकार कर लो द्रव्य मेरा, तीर्थ अर्चन कर रहा।
भंडार भर दो ''चन्दनामति'', आत्मचिंतन चल रहा।।८।।

दोहा

पुष्पदन्त जन्मस्थली, काकन्दी शुभ तीर्थ।
अर्घ्य समर्पण कर प्रभो, पाऊँ आतम तीर्थ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं. ८

भद्रिकापुरी तीर्थ पूजा

स्थापना (बसन्ततिलका छन्द)

शीतल जिनेन्द्र जन्मस्थल को जजूँ मैं।
श्री भद्रिकापुरी पुण्यस्थल भजूं मैं।।
आह्वाननं कर यहाँ प्रभु को बुलाऊँ।
उन जन्मभूमि की पूजा भी रचाऊँ।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छन्द)

सुरगंगा के प्रासुक जल से, सोने का कलशा भर लाया।
पूजा में सहज चढ़ाने को, मेरे अन्तर्मन में आया।।
अध्यात्म सुधारस पीकर के, भव भव की तृषा बुझाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वचनों सम शीतल चंदन, घिसकर कर्पूर मिला लाया।
तीरथ पद में चर्चन करने का, भाव सहज मन में आया।।
अपनी आत्मा में शीतलता का, भाव प्रगट करवाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गुण सम धवल सुअक्षत के, पुंजों को मैं धोकर लाया।
पूजा में पुंज चढ़ाने को, मेरा अन्तर्मन हरषाया।।
निज शुद्ध अखंड प्राप्ति हेतु, अक्षत के पुंज चढ़ाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर कीर्ति सम पुष्पों से, पूजन का भाव हृदय आया।
अंजलि में भरकर पुष्प विविध, पुष्पांजलि मैंने बिखराया।।
हो नष्ट काम की व्यथा मेरी, आतमगुण को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर भावामृत पिण्ड सदृश, नैवेद्य सरस बनवाया है।
पावन रज की पूजन हेतू, भक्ति से चरू चढ़ाया है।।
क्षुधरोग विनाशन हो मेरा, इस चिन्तन को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के कैवल्यसूर्य सम, जगमगता दीपक लाया।
मन से प्रभु जन्मस्थल जाकर, आरति करके अति हर्षाया।।
कर मोह नाश निज आत्मा में, केवल रवि को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर गुण सुरभि सदृश मैंने, चंदनयुत धूप बनाई है।
कर्मों के विध्वंसन हेतु, अग्नी में धूप जलाई है।।
सब कर्ममलों से रहित शुद्ध, क्षायिकगुण मुझको पाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमभाव सम सुखदायी, अमृतफल लेकर आया हूँ।
कर ध्यान प्रभू जन्मस्थल का, फल अर्पित करने आया हूँ।।
ज्ञानामृत फल आस्वादन कर, क्रम से शिवफल भी पाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल ले आया।
आठों द्रव्यों में रत्न मिला, ''चंदनामती'' मन हरषाया।।
प्रभु सम अनर्घ्य पद प्राप्ति हेतु, तीरथ को अर्घ्य चढ़ाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भद्दिलपुर शुभ तीर्थ की, पूजा है सुखकार।
निज पर शांति के लिए, कर लूँ शांतीधार।।

शांतये शान्तिधारा

तीर्थंकर शीतलप्रभू, का उद्यान विशाल।
वही पुष्प अंजलि भरूँ, अर्पूं होउँ खुशाल।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मंडलस्योपरि सप्तमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छंद)

जहाँ मात सुनन्दा ने महलों में, सोलह सपने देखे थे।
शुभ चैत्र कृष्ण अष्टमि तिथि थी, पति से उनके फल पूछे थे।।
उस गर्भकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
अब गर्भवास दुख प्राप्त न हो, ऐसा अनुरोध हमारा है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथगर्भकल्याणक पवित्रभद्रिकापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राजा दृढ़रथ के यहाँ माघ, कृष्णा द्वादशि को प्रभु जन्मे।
देवों के आसन कांप उठे, वे सब भद्रिकापुरी पहुँचे।।
उस जन्मकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
अब पुनर्जन्म दुख प्राप्त न हो, ऐसा अनुरोध हमारा है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मकल्याणक पवित्रभद्रिकापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ब्याह किया औ राज्य किया, शीतल प्रभु ने राजा बनकर।
फिर जन्मतिथी में ही दीक्षा, लेने चल दिये राज्य तजकर।।
उस तपकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
प्रभु सम दीक्षा का योग मिले, ऐसा अनुरोध हमारा है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष वदी चौदश को जहाँ, शीतल को केवलज्ञान हुआ।
धनपति ने तत्क्षण नभ में अधर ही, समवसरण निर्माण किया।।
उस ज्ञानकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
मन में सम्यक्त्व की ज्योति जले, ऐसा अनुरोध हमारा है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रभद्रिका-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जहाँ पर शीतल तीर्थंकर के, हुए चार-चार कल्याणक हैं।
भद्रिकापुरी का कण-कण भी, पावन व पूज्य अद्यावधि है।।
चारों कल्याणक से पवित्र, नगरी को नमन हमारा है।
श्रद्धा भक्ति के साथ समर्पित, यह पूर्णार्घ्य हमारा है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्र भद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं भद्रिकापुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-बाबुल की दुआएं.....

जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।
गुणमाल तीर्थ की सजाते चलो, आतम तीरथ सज जाएगा।।टेक.।।

धरती तो सब हैं एक सदृश, इस मध्यलोक के द्वीपों में।
हैं जीव व पुद्गल सभी जगह, तिर्यंच मनुज के रूपों में।।
प्रभु की गुणगाथा गाते चलो, आतम गुणमय बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।१।।

उनमें ढाई द्वीपों के ही, अन्दर मनुष्य सब रहते हैं।
उससे आगे के किसी द्वीप में, मनुज नहीं जा सकते हैं।।
उनकी महिमा बतलाते चलो, आतम महान बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।२।।

ढाई द्वीपों में प्रथम द्वीप, है जम्बूद्वीप कहा जाता।
उसमें दक्षिण दिश भरतक्षेत्र का, आर्यखंड है सुखदाता।।
उसकी नवगाथा गाते चलो, आतम नव कीरत पाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।३।।

उस आर्यखण्ड में त्रयकालों में, चौबिस तीर्थंकर होते।
उनमें ही वर्तमानकालिक, चौबिस जिन क्षेमंकर होते।।
उन जन्म की गाथा गाते चलो, आतम का बल बढ़ जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।४।।
इन चौबिस जिन की जन्मभूमि, जिनशासन की कीरत मानीं।
इनमें भद्रिकापुरी नगरी, शीतलप्रभु की कीरत मानीं।।
उस तीर्थ को अर्घ्य चढ़ाते चलो, आतम अनर्घ्य पद पाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।५।।
इस जन्मभूमि की पूजन कर, निज जन्म को सार्थक करना है।
इस कर्मभूमि को वंदन कर, निज भव को वंदित करना है।।
अर्चन का भाव बढ़ाते चलो, आतम अर्चित बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।६।।
शीतल प्रभु के कल्याण चार, भद्रिकापुरी इतिहास बने।
''चन्दनामती'' यह अर्घ्य थाल, हम सबके लिए वरदान बने।।
पूर्णार्घ्य की माल चढ़ाते चलो, आतम का मल धुल जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।७।।

दोहा

जन्मभूमि की अर्चना , करे जन्म साकार ।
अर्घ्य समर्पण कर लहूँ, आत्म सौख्य भण्डार।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमि भद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द-**जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।**
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं. ९

सिंहपुरी तीर्थ पूजा

अडिल्ल छन्द

सिंहपुरी श्रेयाँसनाथ जन्मस्थली।
है प्रसिद्ध जो सारनाथ पुण्यस्थली।।
उसकी पूजन हेतु करूँ स्थापना।
तीरथ अर्चन से होगा हित आपना।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र !अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठः ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (सखी छन्द)

प्रासुक जल से भर झारी, कर धार मिटे भ्रम भारी।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन लाया, चर्चत भवताप नशाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय संसार-तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गजमोती सम अक्षत हैं, अर्चत लूँ अक्षय पद मैं।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों को चुन-चुन लाऊँ, भर अंजलि नाथ चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान अनेक बनाये, पूजन हेतू ले आये।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिदीप कपूर जलाऊँ, आरति कर पुण्य बढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप बनाई, अग्नी में उसे जलाई।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आदि फल लाऊँ, शिवफल हित उन्हें चढ़ाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों को मिलाया, ''चन्दना'' प्रभू को चढ़ाया।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जल से करूँ शान्तीधारा, हो शांत जगत यह सारा।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वन्दन।।१०।।

शान्तये शांतिधारा

उपवन से पुष्प मंगाऊँ, पुष्पांजलि कर सुख पाऊँ।
करूँ सिंहपुरी का अर्चन, श्रेयाँसनाथ पद वंदन।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि अष्टमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छन्द)

जिस सिंहपुरी में विष्णुमित्र, राजा ने राज्य किया सुंदर।
देवों की टोली आती थी, जिनकी रानी नंदा के घर।।
शुभ ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी को, श्री श्रेयांस गर्भ में आये थे।
मैं उस नगरी को नमूँ जहाँ, धनपति ने रतन बरसाये थे।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथगर्भकल्याणक पवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि फाल्गुन वदि ग्यारस को जहाँ, श्रेयाँसनाथ का जन्म हुआ।
सुरपति ने मेरु सुदर्शन पर, कर न्हवन जन्म निज धन्य किया।।
फिर सिंहपुरी में लाकर के, जन्मोत्सव पुनः मना डाला।
उस भू को अर्घ्य चढ़ा मैंने , निज जीवन सफल बना डाला।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मकल्याणक पवित्रसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपभोग राज्यवैभव का कर, वैराग्य जहाँ मन में आया।
जहाँ पर बसंतऋतु नाश देख, प्रभु ने दीक्षा पथ अपनाया।।
उस सिंहपुरी में फाल्गुन वदि, ग्यारस को तपकल्याण हुआ।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमन करूँ, तो मेरा भी कल्याण हुआ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथदीक्षाकल्याणक पवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ वदी नवमी को जहाँ, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
श्रेयाँसनाथ तीर्थंकर ने, तुंबुरु तरु नीचे ध्यान किया।।
उस सिंहपुरी को सारनाथ के, नाम से जाना जाता है।
जो अर्घ्य चढ़ाकर जजे इसे, श्रुतज्ञान उसे मिल जाता है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रसिंह-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द)

श्रेयाँसनाथ के गर्भ जन्म तप, ज्ञान चार कल्याण जहाँ।
वह सिंहपुरी है धन्य तथा, सम्मेदशिखर निर्वाण हुआ।।
चारों कल्याणक से पवित्र, श्रीसिंहपुरी को वंदन है।
पूर्णार्घ्य समर्पित कर चाहूँ, तीरथपूजन का शुभ फल मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयासँनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणकपवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं सिंहपुरी जन्मभूमि पवित्रीकृत श्रीश्रेयाँसनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-आओ बच्चों.....

अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन ।। टेक. ।।

बड़े पुण्य से तीर्थंकर प्रभु, जन्म धरा पर लेते हैं।
अपनी पावनता से वे जग, को पावन कर देते हैं।।
उनकी पदरज पाने हेतु, तीर्थ यजन को आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल बनाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।१।।

ढाई द्वीपों में इक सौ, सत्तर जो कर्मभूमियाँ हैं।
वे तीर्थंकर के जन्मों से, बनती धर्मभूमियाँ हैं।।
इसीलिए वे जन्मक्षेत्र, साक्षात तीर्थ कहलाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।२।।

जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र का, आर्यखण्ड जो पहला है।
उसमें जन्मे चौबिस तीर्थंकर का परिचय करना है।।
उनकी जन्मभूमियों को हम, वन्दन करने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।३।।

ग्यारहवें तीर्थंकर श्रीश्रेयाँसनाथ को नमन करूँ।
चारकल्याणक से पावन, उनके जन्मस्थल को प्रणमूँ।।
अतिशयकारी प्रतिमा के, दर्शन भक्तों ने पाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।४।।

जहाँ प्रभू ने राजा बनकर, राजनीति सिखलाई थी।
धर्मनीति के साथ जहाँ पर, न्यायनीति बतलाई थी।
होते ही वैराग्य जहाँ, लौकान्तिक सुरगण आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।५।।

ध्यानलीन हो जहाँ प्रभू ने, कर्म घातिया नष्ट किया।
दिव्यध्वनि सुन जहाँ प्राणियों, ने मिथ्यातम ध्वस्त किया।।
उस श्रेयासँनाथ धर्मस्थल का यश गाने आये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।६।।

हे स्वामी! इस कलियुग में, सम्यक्त्व जहाँ अतिदुर्लभ है।
वहीं आपकी भक्ति से, भक्तों को मिलता सब कुछ है।।
इसीलिए ''चन्दनामती'', हम अर्घ्य सजाकर लाये हैं।
सिंहपुरी गुणमाल सजाकर, चरण चढ़ाने आये हैं।।
सिंहपुरी को नमन, सारनाथ को नमन।।७।।

दोहा

सिंहपुरी की अर्चना, करे चमत्कृत लाभ।
जिन प्रतिमा की वन्दना, हरे सभी दुख व्याधि।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीश्रेयाँसनाथजन्मभूमिसिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.१०

चम्पापुरी तीर्थपूजा

तर्ज–मेरे देश की धरती.....

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य के जन्म से धन्य हुई है,
चम्पापुर नगरी.....।।टेक.।।
जिनशासन के बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी।
उनके पाँचों कल्याणक से, चम्पापुर की धरती नामी।।
वसुपूज्य पिता के साथ जयावति माता धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।१।।
उस चम्पापुर तीरथ का मैं, आह्वानन स्थापन कर लूँ।
सन्निधीकरण कर वासुपूज्य, प्रभु को मन में धारण कर लूँ।।
इस पूजा विधि से पूजनसामग्री भी धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छन्द)

जीवात्मा एवं कर्मों का, सम्बन्ध अनादीकाल से है।
बस इसीलिए जीवन व मरण, हो रहा अनादीकाल से है।।
अब जन्मजरामृतिनाश हेतु, जल से प्रभु का अर्चन कर लूँ।
प्रभु वासूपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुरि का वंदन कर लूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा–मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादर्शन के कारण जीव, अनादी से भव भ्रमण करें।
सम्यग्दर्शन यदि मिल जावे, तब ही उसका उपशमन करे।।
भव आतप के विध्वंस हेतु, चंदन से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षणिक विनश्वर पद प्राप्ती, के लिए सदा अन्याय यहाँ।
आत्मा का लाभ न ले पाया, है अविनश्वर साम्राज्य जहाँ।।
अब अक्षय पद पाने हेतू, अक्षत से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कामदेव के वश होकर, सच्चे सुख को सब भूल रहे।
जिनराज उसी को वश में कर, आतम अमृत में डूब रहे।।
उस कामबाण के नाश हेतु, पुष्पों से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधावेदनी कर्म सभी के, संग अनादि से लगा हुआ।
उसके ही तीव्र उदय होने पर, नहिं अभक्ष्य का भान रहा।।
वह क्षुधारोग विध्वंस हेतु, नैवेद्य से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों में मोहकर्म, सबसे बलवान कहा जाता।
उससे निजरूप न दिखे अतः, वह अंधकार माना जाता।।
अब मोहतिमिर के नाश हेतु, दीपक से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के नाश हेतु, जिनराज तपस्या करते हैं।
क्रमशः उनके नाशन हेतू, श्रावकजन पूजा करते हैं।।
उन कर्मों की उपशांति हेतु, पूजन में धूप दहन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैंने अनादि से इस जग में, ग्रैवेयक तक फल प्राप्त किया।
लेकिन सम्यक्चारित्र बिना, नहिं मुक्ति योग्य फल प्राप्त किया।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, फल से प्रभु की पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमुक्ता आदि मिला करके, मैं अर्घ्य सजाकर ले आया।
''चन्दनामती'' प्रभु पूजन कर, चाहूँ तीरथ पद की छाया।।
अब पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, मैं अर्घ्य चढ़ा प्रणमन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-**गंगनदी का नीर ले, डालूँ जल की धार।**
देश राष्ट्र में शांति हो, मन में यही विचार।।

शान्तये शांतिधारा

चम्पापुर उद्यान से, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मन में अति हरषाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि नवमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (शेर छन्द)

भगवान वासुपूज्य जहाँ गर्भ में आये।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी सुरगण वहाँ आये।।
माता जयावती पिता वसुपूज्य का आँगन।
रत्नों से भर गया करूँ उस भूमि का यजन।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भकल्याणक पवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश जहाँ प्रभु का जन्म हुआ।
स्वर्गों में सुरपती का मुकुट स्वयं झुक गया।।
चम्पापुरी नगरी की पूज्यता है इसलिए।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ उस भू को इसलिए।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मकल्याणक पवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश को ही वैराग्य हुआ था।
प्रभु जी ने स्वयं दीक्षा स्वीकार लिया था।।
उस दीक्षाकल्याणक पवित्र भूमि को नमन।
मंदारगिरि उद्यान का है भाव से अर्चन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रचम्पापुरीनिकटस्थ-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघशुक्ला दुतिया को ज्ञान हो गया।
जिनवर के घातिकर्म का विनाश हो गया।।
मंदारगिरि का पूज्य वह उद्यान मनोहर।
पूजूँ समवसरण का स्थल वह मनोहर।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रचम्पापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश को प्रभू मोक्ष पा गये।
सम्पूर्ण कर्म नाश अचल सौख्य पा गये।।
निर्वाण कल्याणक मनाने इन्द्र आ गये।
मंदारगिरि जजूँ जहाँ से सिद्धि पा गये।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथमोक्षकल्याणक पवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।
चम्पापुरी में माना मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानमोक्षपंचकल्याणक पवित्रचम्पापुरी मंदारगिरितीर्थक्षेत्राभ्यां पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं चम्पापुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा

धर्मतीर्थ वर्तन जहाँ, हुआ वही है तीर्थ।
नमन करूँ उस तीर्थ को, पाऊँ आतम कीर्ति।।१।।

नरेन्द्र छन्द

चम्पापुर नगरी में नृप वसुपूज्य राज्य करते थे।
न्यायनीति में दक्ष प्रजा का न्याय किया करते थे।।
धर्मपरायण श्रावक वे प्रभु भक्ति सदा करते थे।
षट्कर्तव्यों में रत रहकर शिवपथ पर चलते थे।।२।।

कर विवाह गुणयुक्त जयावती रानी को वर लाये।
सांसारिक सुख भोग मनोहर जीवनकाल बितायें।।
एक दिवस देवों की टोली ले धनपति वहाँ आये।
रत्नवृष्टि कर इन्द्राज्ञा से नगरी खूब सजाये।।३।।

जान गये तब राजा रानी तीर्थंकर आएंगे।
छः महीने पश्चात् गर्भकल्याणक मनवाएंगे।।
खुशियों में कैसे बीते छह माह पता नहिं पाया।
आखिर इक रात्री में रानी को सपना हो आया।।४।।

सोलह सपनों के फल में वसुपूज्य ने यह बतलाया।
इक तीर्थंकर बालक रानी तेरे गरभ में आया।।
खुशियों में डूबी रानी अपने महलों में रहतीं।
दिक्कुमारियाँ सेवा में आ उनसे प्रश्न उचरतीं।।५।।

धीरे-धीरे बीत गये नव मास घड़ी वह आई।
तीर्थंकर का जन्म हुआ वहाँ बजने लगी बधाई।।

जन्मकल्याणक का उत्सव इन्द्रों ने आन मनाया।
वासुपूज्य यह नामकरण तीर्थंकर शिशु ने पाया।।६।।

वस्त्राभूषण दिव्य पहन प्रभु पलने में झूले थे।
क्रमशः घुटने के बल चलकर देवों संग घूमे थे।।
उनकी मीठी और तोतली बोली जब माँ सुनती।
मानो जग की सारी निधियाँ उनको फीकी लगतीं।।७।।

तीर्थंकर के बाल्यकाल का वर्णन कैसे करना।
इन्द्रपुरी के सुख भी उनके आगे तुच्छ ही कहना।।
बचपन से यौवन काया को वासुपूज्य ने पाया।
मात-पिता के कहने पर भी ब्याह नहीं रचवाया।।८।।

बालयती बन तप करके कैवल्यज्ञान उपजाया।
घाति अघाती कर्म नाश कर मोक्षधाम प्रगटाया।।
चम्पापुर उनके पाँचों कल्याणक से पावन है।
वहीं निकट मंदारगिरी चम्पापुरि का पर्वत है।।९।।

वर्तमान में ये दोनों प्रभु वासुपूज्य के तीरथ।
भव्यात्माओं को दर्शन से प्रगटाते मुक्तीपथ।।
इसीलिए चम्पापुर तीरथ की जयमाल बनाई।
वासुपूज्य तीर्थंकर की पूजन में इसे चढ़ाई।।१०।।

एक यही इच्छा है मेरी जन्मभूमि अर्चन में।
रत्नत्रय निधि को पाकर कर पाऊँ जन्म सफल मैं।।
बस तब तक ''चंदनामती'', पूजन का भाव रहेगा।
पूज्य न जब तक बन जाऊँ, प्रभु नाम हृदय में रहेगा।।११।।

मेरा यह पूर्णार्घ्य समर्पण, चम्पापुर तीरथ को।
है पवित्र जिस भू का कण कण, नमन है उसकी रज को।।
दुःखों का क्षय हो प्रभु! मेरे, कर्मों का भी क्षय हो।
मरण समाधीयुत हो जिससे, मेरा सुख अक्षय हो।।१२।।

दोहा

तीर्थंकर अरु तीर्थ का, प्रस्तुत यह गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं चहूँ, स्वातम में विश्राम।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चंदना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.११

कम्पिलपुरी तीर्थ पूजा

स्थापना (कुसुमलता छन्द)

तीर्थंकर श्री विमलनाथ की, जन्मभूमि काम्पिल्यपुरी।
गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक से पावन नगरी।।
आह्वानन स्थापन करके, पूजूँ कम्पिल तीरथ को।
जिनवर की पद धूलि नमन कर, गाऊँ जिनगुणकीरत को।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (अडिल्ल छन्द)

गंग नदी का नीर, कलश में भर लिया।
पाऊँ भवदधि तीर, धार पद कर दिया।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वंदूँ कम्पिलधाम, भव भव दुख से छूटूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर के लाइये।
जिनवर चरणकमल से, पूज्य बनाइये।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिलधाम भव भव दुख से छूटूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्जवल अक्षत के पुंज हैं।
अक्षयपद के हेतु निजातम कुंज हैं।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्प चमेली बेला पुष्प चढ़ाय के।
कामव्यथा नश जाय स्वात्म सुख पाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर आदि बहुत पकवान ले।
क्षुधा व्याधि नाशन हित नाथ चढ़ाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतथाल में घृत का दीप जलाय के।
मोहनाश हो तीरथ आरति गाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकास-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु की शुद्ध धूप बनवाय के।
कर्म नष्ट हो प्रभु के निकट जलाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिलधाम भव भव दुख से छूटूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूरों का गुच्छा सुंदर लाय के।
सम्यक्फल हो प्राप्त जिनेश चढ़ाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्ययुत अर्घ्य चढ़ाऊँ नाथ मैं।
तभी ''चन्दनामती'' मिले गुणराज्य है।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

विमलनाथ पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम सद्म, कम्पिलजी तीरथ जजूँ।।१०।।

शांतये शांतिधारा

चंपक हरसिंगार, प्रभु पद पुष्पांजलि करूँ।
भरे सुगुण भंडार, कम्पिल जी तीरथ जजूँ।।१।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि दशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (दोहा)

ज्येष्ठ वदी दशमी जहाँ, हुआ गर्भकल्याण।
विमलनाथ की वह धरा, पूजूँ करूँ प्रणाम।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथगर्भकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी तिथि चौथ को, जन्मे विमल जिनेश।
अतः कम्पिला तीर्थ को, पूजें नमें सुरेश।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म तिथी में ही जहाँ, हुआ प्रभू वैराग्य।
उपवन कम्पिल तीर्थ का, अर्चूं लहूँ स्वराज्य।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ श्रेष्ठ तिथि, हुआ जहाँ पर ज्ञान।
समवसरण से पूज्य वह, कम्पिल तीर्थ महान।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द)

श्री विमलनाथ तेरहवें तीर्थंकर का अर्चन करना है।
उनके चारों कल्याणक से, पावन तीरथ को भजना है।।
उस कम्पिल जी में अद्यावधि, प्राचीन कथानक मिलता है।
उसको पूर्णार्घ्य चढ़ाने से, निज मन का उपवन खिलता है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंरकश्रीविमलनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रकम्पिलपुरी तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं कम्पिलपुरीजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-यदि भला किसी का कर न सको.....

कम्पिल जी की गौरव गाथा, सब मिलकर वृद्धिंगत करना।
तीर्थंकर विमलनाथ जी के, जन्मस्थल का अर्चन करना।।टेक०।।

कृतवर्मा पितु के महलों में, जयश्यामा माँ के आंगन में।
हुई पन्द्रह महिने रत्नवृष्टि, उस पुण्यांगण का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।१।।

जन्मे खेले जिस धरती पर, वहाँ स्वर्गपुरी भी आती थी।
सौधर्म इन्द्र जहाँ किंकर था, उस कम्पिलजी का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।२।।

जहाँ ब्याह किया और राज्य किया, फिर भी आसक्त न थे उसमें।
लख बर्फ नाश दीक्षा ले ली, उस तपोभूमि का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।३।।

तप से जहाँ घातिकर्म नाशे, कैवल्यज्ञान का उदय हुआ।
बना समवसरण गगनांगण में, उस ज्ञान स्थल का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।४।।

अपनी दिव्यध्वनि से प्रभु ने, फिर जन-जन का कल्याण किया।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, उस सिद्धक्षेत्र का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।५।।

कम्पिल जी की यह धर्मकथा, जिन आगम ग्रंथ पुराण कहें।
लेकिन इतिहास भी है प्रसिद्ध, सति द्रौपदि के जन्मस्थल का।।
तीर्थंकर०।।६।।

है कथा महाभारत युग की, नृप द्रुपद यहाँ पर रहते थे।
उनकी कन्या द्रौपदी हुई, उसके सतीत्व का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।७।।
पांचाल देश की रजधानी, काम्पिल्यपुरी कहलाती थी।
द्रौपदी तभी पाञ्चाली कहलाई, इतिहास यही पढ़ना।।
तीर्थंकर०।।८।।
है वर्तमान गौरवशाली, कम्पिल की श्रीवृद्धि लखकर।
जिनमंदिर है प्राचीन जहाँ, प्रभु विमलनाथ का क्या कहना।।
तीर्थंकर०।।९।।
कम्पिलनगरी के कण-कण को, मेरा वंदन अन्तर्मन से।
मन मेरा भी हो विमल सदा, अनुरोध यही स्वीकृत करना।।
तीर्थंकर०।।१०।।
जयमाला पढ़कर तीरथ की, पूर्णार्घ्य समर्पण करता हूँ।
''चंदनामती'' मति पूर्ण बने, यह अर्घ्य मेरा स्वीकृत करना।।
तीर्थंकर०।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, ''चंदना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.१२

रत्नपुरी तीर्थ पूजा

स्थापना (कुसुमलता छन्द)

श्री तीर्थंकर धर्मनाथ ने, रत्नपुरी में जन्म लिया।
धर्मतीर्थ का वर्तन करके, जन्मभूमि को धन्य किया।।
पन्द्रहवें तीर्थंकर की, उस जन्मभूमि को वन्दन है।
आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण विधी से अर्चन है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनम् ।

अष्टक

शीतल झरनों का जल पीकर, तत्काल प्यास कुछ शांत हुई।
पर पुनः प्यास लग जाने से, वह इच्छा फिर से जाग गई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, की पूजन को जल लाया हूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन घिस लेपन करने से भी, दाह न मेरी शान्त हुई।
बस उसका असर क्षीण होते ही, दाह पुनः प्रारम्भ हुई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, पूजन को चन्दन लाया हूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिक्षण क्षय होती काया में, अक्षय इक आत्मतत्व ही है।
इस काया से तप कर अखंड, मिलता परमात्मतत्त्व भी है।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी, पूजन को अक्षत लाया हूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये विनाशनाय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियविषयों को भोग भोग कर, बहुत बार छोड़ा मैंने।
उनको तज यदि ले लिया योग, कुछ कर्मबन्ध तोड़ा मैंने।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, फूलों का गुच्छा लाया हूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित पकवानों को खाकर, तन की तो क्षुधा कुछ शांत हुई।
पर पुनः भूख लग जाने से, फिर क्षुधा की बाधा जाग गई।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, नैवेद्यथाल भर लाया हूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग ज्योति से भरे हुए, संसार में यद्यपि रहता हूँ।
अन्तर्ज्योती नहिं प्राप्त हुई, भवभ्रमण तभी मैं करता हूँ।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, घृतदीपक भर कर लाया हूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल सुगंधि के लिए प्रभो! मैंने बहु धूप जलाई है।
नहिं कर्मनाश के लिए प्रभो! युक्ती मेरे मन आई है।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ! तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, मैं धूप बनाकर लाया हूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर मौसम के फल खाकर मैंने, तन मन को कुछ तृप्त किया।
नहिं पूजन में फल चढ़ा तभी, शिवफल बिन मन संतप्त रहा।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ! तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि के अर्चन हित, फल थाल सजाकर लाया हूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल ले आया।
चन्दनामती मैं पद अनर्घ्य, पाने का भाव बना लाया।।
इसलिए प्रभो हे धर्मनाथ, तुम चरणों में मैं आया हूँ।
तुम जन्मभूमि श्री रत्नपुरी को, अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

श्री जिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले ज्ञान साम्राज्य, तिहुंजग में भी शांति हो।।१०।।

शांतये शांतिधारा

बेला कमल गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
तीर्थ अर्चनालाभ, पाऊँ सुख संपति भरूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि एकादशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य

तर्ज–जहाँ डाल–डाल पर सोने की.....

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।टेक.।।
वैशाख सुदी तेरस को जहाँ, धनपति ने रतन बरसाया।
प्रभु धर्मनाथ का गर्भकल्याणक, उत्सव खूब मनाया।।उत्सव.....
पितु भानु मात सुव्रता के मन में, आनंद अद्भुत छाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
उस गर्भकल्याणक से पवित्र, धरती को शत वन्दन है।
सरयू तट निकट अयोध्या के, वह बसा तीर्थ पावन है।। वह बसा.....
बस उसी रत्नपुरि नगरी को, मैं अर्घ्य चढ़ाने आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथगर्भकल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।
शुभ माघ शुक्ल तेरस के दिन, जहाँ धर्मनाथ प्रभु जन्मे।
ऐरावत हाथी पर चढ़कर, सौधर्म इन्द्र वहाँ पहुँचे।।सौधर्म...
जिनबालक को लख प्रथम शची का रोम-रोम हर्षाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
कर मेरु शिखर पर जन्मोत्सव, वस्त्राभूषण पहनाये।
उस जन्मकल्याणक नगरी की, पूजा करने सब आये।।पूजा.....
मैं भी उस पावन जन्मभूमि का वन्दन करने आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मकल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

श्रीरत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।टेक.।।
प्रभु धर्मनाथ तीर्थंकर ने, जहाँ उल्कापात को देखा।
सब राजपाट तज दिया तुरत, फिर मुड़कर भी नहिं देखा।।फिर.....
शुभ माघ सुदी तेरस को ही मन में वैराग्य समाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
जिस धरती पर लौकांतिक देवों का आगमन हुआ था।
जहाँ नमः सिद्ध कह धर्मनाथ ने, मुनिव्रत ग्रहण किया था।। मुनिव्रत.....
उस रत्नपुरी के कण-कण को मैंने यह अर्घ्य चढ़ाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथदीक्षाकल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

श्री रत्नपुरी तीरथ अर्चन का भाव हृदय में आया,
मैं रत्नथाल भर लाया ।। टेक. ।।
जिस नगरी के उपवन में प्रभु को, केवलज्ञान हुआ था।
जहाँ समवसरण की रचना का, तत्क्षण निर्माण हुआ था। तत्क्षण.....
कर घातिकर्म का नाश जहाँ निज को भगवान बनाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।१।।
जहाँ पौष शुक्ल पूनम के दिन, दिव्यध्वनि प्रभु ने खिराई।
ऊँकारमयी निजवाणी से, जन-जन की प्यास बुझाई।।जन जन की.....
उस ज्ञानभूमि को अर्घ्य चढ़ाकर रोम-रोम हर्षाया,
मैं रत्नथाल भर लाया।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्ररत्नपुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं.....।।४।।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

पन्द्रहवें जिनवर धर्मनाथ के, जहाँ चार कल्याण हुए।
सम्मेदशिखर को वंदूँ मैं, जहाँ से वे प्रभु शिवधाम गये।।
मैं उन चारों कल्याणक से, पावन धरती को नमन करूँ।
पूर्णार्घ्य थाल ले रत्नपुरी को, अर्पण कर मैं नमन करूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्ररत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- **ॐ ह्रीं रत्नपुरीजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

शेरछन्द

श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वन्दना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।टेक.।।

सौ इन्द्र भी तीर्थंकर के पद कमल जजें।
गणधर गुरु भी गुण का वर्णन न कर सकें।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।१।।

पाँचों ही कल्याणक जिन्हों के देव मनाते।
उत्सवविशेष जन्मकल्याणक में रचाते।।श्रीरत्नपुरी०।।२।।

यह पुण्य भी सौधर्म इन्द्र का विशेष है।
तीर्थंकरों के पंचकल्याणक मनाते हैं।।श्रीरत्नपुरी०।।३।।

वे विक्रिया पृथक् करें अपने शरीर की।
निज स्वर्ग में रहता है असली शरीर ही ।।श्रीरत्नपुरी०।।४।।

जब रत्नपुरी में भी धर्मनाथ जी जनमे।
सौधर्म इन्द्र स्वर्ग से तुरत वहाँ पहुँचे।।श्रीरत्नपुरी०।।५।।

चारों ही कल्याणक मनाये देवों ने आके।
सम्मेदशिखर से प्रभू निर्वाण गये थे।।
श्रीरत्नपुरी तीर्थ की मैं वंदना करूँ।
प्रभु धर्मनाथ के चरण की अर्चना करूँ।।६।।

उस रत्नपुरी तीर्थ से इतिहास इक जुड़ा।
देवों के द्वारा निर्मित मंदिर वहाँ मिला।।श्री रत्नपुरी०।।७।।

दर्शनकथा में हुई ख्यात जो मनोवती।
दर्शन मिले रतनपुरी में धन्य वो सती।।श्रीरत्नपुरी०।।८।।

है आज भी मंदिर वहाँ प्रभु धर्मनाथ का।
तिथि माघ शुक्ल तेरस मेला लगा करता।।श्रीरत्नपुरी०।।९।।

मैं रत्नपुरी तीर्थ को पूर्णार्घ्य समर्पूं।
निजभाव तीर्थ प्राप्त हेतु नाथ को अर्चूं।।श्रीरत्नपुरी०।।१०।।

प्रभु जन्मभूमि पूजन से जन्म सफल हो।
फिर ''चन्दनामती'' सभी पुरुषार्थ सफल हों।।श्रीरत्नपुरी०।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीधर्मनाथजन्मभूमिरत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में ''चंदना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.१३

हस्तिनापुर तीर्थ पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

स्थापना-गीता छंद

श्री शांति कुंथु अर जिनेश्वर, जन्म ले पावन किया।
दीक्षा ग्रहण कर तीर्थ यह, मुनिवृन्द मन भावन किया।।
निज ज्ञान ज्योति प्रकट कर, शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को, मैं पूजहूँ हर्षित हिया।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (चामर छंद)

तीर्थ रूप शुद्ध स्वच्छ सिंधु नीर लाइये।
गर्भवास दुःखनाश तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामुत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमादि अष्ट गंध लेय तीर्थ पूजिये।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये।।हस्तिनापुरी०।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र तुल्य श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
देह सौख्य छोड़ आत्म सौख्य पुंज पाइये।।
हस्तिनापुरी पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद केतकी गुलाब वर्ण वर्ण के लिये।
मार मल्लहारि तीर्थक्षेत्र को चढ़ा दिये।।हस्तिनापुरी०।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर पूरिका इमर्तियाँ भराय थाल में।
तीर्थ क्षेत्र पूजते क्षुधा महाव्यथा हने।।हस्तिनापुरी०।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्योति अंधकार को हने।
आरती करंत अंतरंग ध्वांत को हने।।हस्तिनापुरी०।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार- विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध लेय अग्नि पात्र में जलाइये।
मोह कर्म भस्म को उड़ाय सौख्य पाइये।।हस्तिनापुरी०।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मातुलिंग आम्र सेब संतरा मंगाइये।
तीर्थ पूजते हि सिद्धि संपदा सुपाइये।।हस्तिनापुरी०।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय मोक्ष-फलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ्य को बनाइये।
''ज्ञानमति'' सिद्धि हेतु तीर्थ को चढ़ाइये।।हस्तिनापुरी०।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमिहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामति स्वाहा।

(इति मण्डलस्योपरि द्वादशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (रोला छंद)

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु शांति, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संग, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, तीरथ रज सुखकारी।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथगर्भकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु शांति, ज्येष्ठ वदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निजमाथ, जिनवर चरण कमल में।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथजन्मकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु शांति, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तपकल्याणक करते।
गजपुर अर्घ्य चढ़ाय, हम दुख संकट हर लें।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इन्द्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
अर्घ्य चढ़ावें भव्य, हस्तिनापुर नगरी है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

श्रावण वदि दशमी तिथि, कुंथु गर्भकल्याण।
इन्द्र हस्तिनापुरि नमें, मैं पूजूँ वह थान।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथगर्भकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सित वैशाख की, जन्मे कुंथु जिनेश।
मैं पूजूं वह जन्म भू, नमन करूँ सिर टेक।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथजन्मकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, दीक्षा ली जिनदेव।
वही हस्तिनापुर जजूँ, करूँ कुंथु प्रभु सेव।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल तिथि तीज में, प्रगट हुआ जहाँ ज्ञान।
हस्तिनापुर की वह धरा, पूजूँ हो कल्याण।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीकुंथुनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रहस्तिनापुर-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छन्द

फाल्गुन कृष्णा तृतीया में, अर जिनवर गर्भ बसे थे।
जहाँ सुरपति उत्सव कीना, हम पूजें भवदुख हीना।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथगर्भकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर शुक्ला चौदश के, जहाँ जन्में प्रभु सुर हर्षे।
उस हस्तिनापुर की अर्चा, हम करें सदा प्रभु चर्चा।।१०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथजन्मकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदि दशमी तिथि में, दीक्षा धारी प्रभु वन में।
इन्द्रों से पूजा पाई, वह तीर्थ जजूँ सुखदाई।।११।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि बारस तिथि में, केवल रवि पाया प्रभु ने।
बारह गण को उपदेशा, हम पूजें भक्ति समेता।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीअरनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रहस्तिनापुरतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

जहाँ तीर्थंकरत्रय कामदेव, चक्री पद के धारी जन्मे।
छहखण्ड जीत कर हस्तिनापुर, है नगरी के राजा वे बने।।
उस भू पर उनके चार-चार, कल्याणक इन्द्र मनाते थे।
वह तीर्थ जजूँ पूर्णार्घ्य चढ़ा, जिसकी महिमा सुर गाते थे।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजिनेन्द्र गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-चतुःचतुःकल्याणकपवित्रहस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं हस्तिनापुरजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीशांतिकुंथुअर-जिनेन्द्रेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

समवसरण में राजते, ज्ञान ज्योति से पूर्ण।
शांति कुंथु अर नाथ को, पूजत ही दुःख चूर्ण।।१।।

शंभु छंद

श्री आदिनाथ को सर्व प्रथम, इक्षुरस का आहार दिया।
श्रेयांस नृपति ने यहाँ तभी से, दान तीर्थ यह मान्य हुआ।।
देवों ने पंचाश्चर्य किया, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
वैशाख सुदी अक्षय तृतिया, यह तिथि भी सब जग पूज्य हुई।।२।।
श्री शांति कुंथु अर तीर्थंकर, इन तीनों के इस तीरथ पर।
हुए गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक इस ही भूतल पर।।
अगणित देवी-देवों के संग, सौधर्म इन्द्र तब आये थे।
अतिशय कल्याणक पूजा कर, भव भव के पाप नशाये थे।।३।।
आचार्य अकंपन के संघ में, मुनि सात शतक जब आये थे।
उन पर बलि ने उपसर्ग किया, तब जन जन मन अकुलाये थे।।
श्री विष्णुकुमार मुनीश्वर ने, उपसर्ग दूर कर रक्षा की।
रक्षाबंधन का पर्व चला, श्रावण सुदि पूनम की तिथि थी।।४।।
गंगा में गज को ग्राह ग्रसा, तब सुलोचना ने मंत्र जपा।
द्रौपदी सती का चीर बढ़ा, सतियों की प्रभु ने लाज रखा।।
श्रेयांस सोमप्रभ जयकुमार, आदीश्वर के गणधर होकर।
शिव गये अन्य नरपुंगव भी, पांडव भी हुए इसी भू पर।।५।।
राजा श्रेयांस ने स्वप्ने में, देखा था मेरु सुदर्शन को।
सो आज यहाँ तेरानवे फुट, उत्तुंग सुमेरु बना अहो।।

यह जंबूद्वीप बना सुन्दर, इसमें अठत्तर जिन मंदिर।
इक सौ तेईस हैं देवभवन, उसमें भी जिन प्रतिमा मनहर।।६।।
जो भक्त भक्ति में हो विभोर, इस जम्बूद्वीप में आते हैं।
उत्तुंग सुमेरु पर चढ़कर, जिन वंदन कर हर्षाते हैं।।
फिर सब जिनगृह को अर्घ चढ़ा, गुण गाते गद्गद हो जाते।
वे कर्म धूलि को दूर भगा, अतिशायी पुण्य कमा जाते।।७।।
श्री आदिनाथ, भरतेश और, बाहुबलि तीन मूर्ति अनुपम।
श्री शांति कुंथु अर चक्रीश्वर, तीर्थंकर की मूर्ति निरुपम।।
वर कल्पवृक्ष महावीर प्रभू का, जिनमंदिर अतिशोभित है।
यह कमलाकार बना सुन्दर, इसमें जिनप्रतिमा राजित है।।८।।
जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर, जय इनके पंचकल्याणक की।
जय जय हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, जय जय हो सम्मेदाचल की।।
जय जंबूद्वीप तेरहों द्वीप, नंदीश्वर के जिन भवनों की।
जय भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन और, सहदेव नकुल पांडव मुनि की।।९।।

दोहा

तीर्थक्षेत्र की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
''ज्ञानमती'' सम्पत्ति दे, भरे आत्म सुखकोष।।१०।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिकुंथुअरनाथजन्मभूमि हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द–**जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।**
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, चन्दना वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.१४

मिथिलापुरी तीर्थ पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

श्री मल्लिनाथ नमिनाथ जिनेश्वर, जन्मभूमि मिथिलानगरी।
तीर्थंकर द्वय के चार-चार, कल्याणक से पावन नगरी।।
उस मिथिलापुरि की पूजन का, मैंने शुभ भाव बनाया है।
स्थापन विधि द्वारा मैंने, निज मन को तीर्थ बनाया है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक (गीता छन्द)

लेकर विमल जल तीर्थ पूजूँ, कर्ममल हट जाएगा।
अध्यात्म रस होगा प्रगट, आनन्द अनुभव आएगा।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्रायजन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध लेकर, पदकमल चर्चन करूँ।
आत्मीक समतारस मगन हो, तीर्थ का अर्चन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव-भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्रायसंसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा किरण सम धवल अक्षत, पुंज प्रभु सम्मुख धरूँ।
शुभ ध्यान में लवलीन होकर, आत्म अक्षयनिधि भरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्रायअक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली पुष्प सुरभित, लाय जो प्रभु पद जजें।
उन आत्मगुण कलिका खिले, अतिशीघ्र कामव्यथा नशे।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्रायकामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुझिया समोसे आदि व्यंजन, लाय प्रभु सम्मुख धरूँ।
अध्यात्मरस अमृत विमिश्रित, अतुल अनुपम सुख वरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतदीप की ज्योती जलाकर, आरती प्रभु की करूँ।
अज्ञानतिमिर हटाय अन्तर, ज्ञान की ज्योति भरूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्रायमोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुरभित धूप लेकर, अग्नि प्रज्ज्वालन करूँ।
जड़कर्म को कर दग्ध अपनी, आतमा पावन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरी-ङतीर्थक्षेत्रायअष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अखरोट किसमिस आम्र आदिक, फल चढ़ा पूजन करूँ।
फल मोक्ष की अभिलाष लेकर, तीर्थ का अर्चन करूँ।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज, दीप धूप व फल लिया।
प्रभु पदकमल में ''चन्दनामति'' अर्घ मैं अर्पण किया।।
मिथिलापुरी दो जिनवरों की, जन्मभूमि को जजूँ।
भव भव दुखों से छूटने के, हेतु जिनपद को भजूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कंचन कलशा में भरा, गंग नदी का नीर।
तीर्थ पाद धारा करूँ, मिले भवोदधि तीर।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

प्रभु के उपवन से चुना, बेला जुही गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण किया, मिला निजातम लाभ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि त्रयोदशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (दोहा)

चैत्र सुदी एकम जहाँ, हुआ गर्भ कल्याण।
मल्लिनाथ की वह धरा, पूजूँ हो कल्याण।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथगर्भकल्याणक पवित्रमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी ग्यारस जहाँ, हुआ जन्मकल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, मिथिला जन्मस्थान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथजन्मकल्याणक पवित्रमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मतिथी को ही जहाँ, उपजा प्रभु वैराग।
पूजूँ मैं मिथिलापुरी, दीक्षास्थल आज।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी दुतिया तिथि, पाया केवलज्ञान।
मल्लिनाथ की वह धरा, पूजूँ सौख्य महान।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्र-मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

आश्विन कृष्णा दूज, नमि प्रभु आये गर्भ में।
वह मिथिलापुरि पूज्य, अतः चढ़ाऊँ अर्घ्य मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथगर्भकल्याणक पवित्रमिथिलापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि आषाढ़, नमि जिनवर जन्मे जहाँ।
जजूँ जन्मस्थान, मिथिला में उत्सव हुआ।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथजन्मकल्याणक पवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मदिवस ही त्याग, लिया नमीप्रभु ने जहाँ।
पूजूँ दीक्षाधाम, मिथिलापुरि तीरथ महा।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस मगसिर शुक्ल, केवलज्ञान प्रकाश था।
नमिप्रभु हुए विशुद्ध, पूजूँ मिथिला की धरा।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनमिनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रमिथिला-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)

मिथिलापुरि की जिस धरती पर, श्री मल्लि व नमिप्रभु जन्मे हैं।
उन दोनों प्रभु के गर्भ जन्म, तप ज्ञान कल्याण वहीं पे हैं।।
उस नगरी को मैं अर्घ्य चढ़ाकर, एक यही प्रार्थना करूँ।
रत्नत्रय निधि हो पूर्ण मेरी, तब भव सन्तति खंडना करूँ।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमल्लिनाथनमिनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान चतुः चतुःकल्याणक पवित्रमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं मिथिलापुरीजन्मभूमि पवित्रीकृत श्रीमल्लिनाथनमिनाथ जिनेन्द्राभ्यां नमः।

जयमाला

(शेर छंद)

हे नाथ ! तेरे जन्म से भू धन्य हुई है।
हे नाथ ! तेरे जन्म मरण कुछ भी नहीं है।। टेक०।।

तुमने अनादिकाल से जग में भ्रमण किया।
पुरुषार्थ करके उसका अब अंत कर दिया ।।हे नाथ०।।१।।

भव भव से आत्मतत्व के चिन्तन में लग गये।
इस हेतु ही प्रभु एक दिन भगवान बन गये।।हे नाथ०।।२।।

श्री मल्लिप्रभु उन्नीसवें तीर्थेश जैन के।
जन्मे थे जो मिथिलापुरी में स्वर्ग से आके।।हे नाथ०।।३।।

पितु कुम्भराज एवं माता प्रजावती।
थे धन्य तथा मिथिला की धन्य प्रजा थी।।हे नाथ०।।४।।

जातिस्मरण से प्रभु को वैराग्य जब हुआ।
बन बालयती तप कर कैवल्य वर लिया।।हे नाथ०।।५।।

नमिनाथ जी इक्कीसवें तीर्थेश भी जन्मे।
समझो कि तीस माह वहाँ रत्न थे बरसे।।हे नाथ०।।६।।

माँ वप्पिला की महिमा का पार नहीं था।
राजा विजय का हर्ष भी अपार वहीं था।। हे नाथ०।।७।।

जातिस्मरण से उनको भी वैराग्य हो गया।
सब राजपाट छोड़ शिव से राग हो गया।। हे नाथ०।।८।।

तीर्थंकरों की धरती ही तीर्थ कहाती।
तीर्थों की वन्दना ही आत्मकीर्ति बढ़ाती।।हे नाथ०।।९।।

मैं तीर्थक्षेत्र मिथिला की वन्दना करूँ।
जयमाल का पूर्णार्घ्य लेके अर्चना करूँ।। हे नाथ०।।१०।।

मैं भी मनुष जनम का सार प्राप्त कर सकूँ।
वरदान दो निज आत्म का उद्धार कर सकूँ।। हे नाथ०।।११।।

अतएव ''चन्दना'' प्रभु से प्रार्थना करे।
हो रत्नत्रय की प्राप्ति यही याचना करे।। हे नाथ०।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमल्लिनाथनमिनाथजन्मभूमिमिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से शीश उन पावन बने।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः ।

G G G G G

पूजा नं.१५

राजगृही तीर्थ पूजा

तर्ज–फूलों सा.....

मुनिसुव्रत जन्मस्थली, राजगृही धाम है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।टेक.।।

जिस भूमि को ग्यारह लाख वर्षों, पहले ही यह सौभाग्य मिला।
सोमावती माता के महल में, पूरब दिशा का सूरज खिला।।
सूर्य चमकता है, तीर्थ महकता है, राजगृही के शुभ नाम से।
तीरथ की कीरत अमर, होती है प्रभु नाम से।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।१।।

सबसे प्रथम पूजन में करूँ, आह्वानन व स्थापना तीर्थ की।
सन्निधिकरण से अर्चन करूँ, शुद्धातम की आराधना हेतु ही।
मन में बसा लूँ मैं, प्रभु को बिठा लूँ मैं, हो जाएगा पावन मन मेरा।
तीरथ अरु तीर्थंकरों की, पूजन का फल मान्य है।
बीसवें जिनेन्द्र हैं, इन्द्रगण से वंद्य हैं, त्रैलोक्य में मान्य हैं।।
मुनिसुव्रत.।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक

तर्ज–जैनधर्म के हीरे मोती.....

तीर्थंकर मुनिसुव्रत प्रभु की, जन्मभूमि है राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।
क्षीरोदधि का जल लेकर, जलधारा कर लूँ भक्ति से।
जन्मजरामृत्यू का क्षय हो, प्रगटे आतम शक्ति है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वन्दित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्य मही।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जन्म–जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर, जिनवर पद में चर्चन कर लूँ।
भवआतप हो जाय नष्ट, इस हेतु तीर्थ अर्चन कर लूँ।।
इसी भावना को लेकर, मैं मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय संसार–तापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत के पुंजों में ही, गजमोती की कल्पना करूँ।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अक्षय–पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदि पुष्प में ही, मैं दिव्य पुष्प कल्पना करूँ।
कामबाण के नाश हेतु, मैं तीरथ की अर्चना करूँ।।

इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के भोजन की, कल्पना करूँ नैवेद्य बना।
पूजन में वह अर्पण कर, क्षुधरोग विनाशन हो अपना।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक में ही रत्नों के, दीपक की कल्पना किया।
मोह नाश हेतू आरति कर, तीरथ की अर्चना किया।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर चंदन से मिश्रित, धूप जलाई अग्नी में।
कर्म भस्म करने हेतू, तीरथ की पूजा करनी है।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे सुस्वादू फल मैंने, जाने कितने खाये हैं।
शिवफल हेतू अब पूजन में, उन्हें चढ़ाने आये हैं।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे भगवन् ! आठों द्रव्यों को, मिला अर्घ्य अर्पण कर लूँ।
पद अनर्घ्य के हेतु ''चन्दनामती'' तीर्थ अर्चन कर लूँ।।
इसी भावना को लेकर मैं, मन से जाऊँ राजगृही।
मुनियों से वंदित नगरी को, पूजूँ पाऊँ सौख्यमही।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**गंग नदी की धार का, प्रासुक जल भर लाय।**
शांतिधारा मैं करूँ, निज पर को सुखदाय।।

शान्तये शांतिधारा

राजगृही उद्यान के, विविध पुष्प मंगवाय।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, जीवन हो सुखदाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि चतुर्दशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (रोला छन्द)

श्रावण कृष्णा दूज, राजगृही नगरी में।
सोमावति के गर्भ, आये त्रिभुवनपति हैं।।
मैं भी अर्घ्य चढ़ाय, उस नगरी को पूजूँ।
पाऊँ पद सुखदाय, भवबंधन से छूटूँ।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि वैशाख सुमास, की द्वादशि तिथि आई।
मुनिसुव्रत भगवान, जन्मे खुशियाँ छाईं।।
जन्मकल्याण पवित्र, उस नगरी को अर्चन।
कर हो पावन चित्त, राजगृही का वंदन।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मकल्याणक पवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी वदि वैशाख, को दीक्षा जहाँ धारी।
जातिस्मृति से नाथ, ने सम्पत्ति बिसारी।।
नीलबाग से प्रसिद्ध, था राजगृहि उपवन।
पूजूँ उसको नित्य, खिल जावे मन उपवन।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथदीक्षाकल्याणक पवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवमी वदि वैशाख, चंपक तरुतल तिष्ठे।
केवलज्ञान प्रकाश, पाया मुनिसुव्रत ने।।
राजगृही उद्यान, समवसरण से पावन।
पूजूँ जिनवर थान, हो मेरा मन पावन।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रराजगृही-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (रोला छंद)

मुनिसुव्रत भगवान, के चारों कल्याणक।
हुए राजगृह माँहि, अतः धरा वह पावन।।
ले पूर्णार्घ्य सुथाल, श्रद्धा सहित चढ़ाऊँ।
मन का मैल उतार, तीरथ का फल पाऊँ।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक पवित्रराजगृहीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं राजगृहीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

शेरछन्द

हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।टेक.।।

यूँ तो जगत में जन्मते हैं प्राणि अनन्ते।
मरते हैं प्रतिक्षण भी यहाँ प्राणि अनन्ते।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।१।।

एकेन्द्रि से पंचेन्द्रि तक जो जीव आतमा।
उन सबमें छिपा शक्ति से भगवान आतमा।। हे नाथ.।।२।।

भगवान आतमा प्रगट पुरुषार्थ से होता।
पुरुषार्थ बिना मात्र जग में खाना है गोता।। हे नाथ.।।३।।

तीर्थंकरों का सिद्धपद निश्चित है यद्यपी।
फिर भी तपस्या करके वे पाते हैं शिवगती।।हे नाथ.।।४।।

मैंने भी मनुष जन्म जो पाया अमोल है।
वह मोक्षमार्ग के लिए सचमुच ही मूल है।।हे नाथ.।।५।।

इस काल में निर्वाणपद की प्राप्ति नहीं है।
पर जन्म सार्थ करने की युक्ति यहीं है।।हे नाथ.।।६।।

पुरुषार्थ के द्वारा प्रथम तो कार्य शुभ करें।
जीवन में सदाचार से सारे अशुभ टलें।।हे नाथ.।।७।।

प्रभु जन्मभूमि अर्चन का अर्थ है यही।
आत्मा में रागद्वेष अल्प होवें शीघ्र ही।।हे नाथ.।।८।।

इस राजगृही में जनम मुनिसुव्रतेश का।
प्रभु वीर की खिरी यहीं पे प्रथम देशना।।
हे नाथ! तेरी जन्मभूमि को प्रणाम है।
हे नाथ! तेरे जन्म की महिमा महान है।।९।।

है पंच पहाड़ी में एक विपुलाचल गिरी।
जिस पर बनी रचना है प्रभू गंधकुटी की।।हे नाथ.।।१०।।

गणधर सुधर्मा ने यहीं से सिद्धपद लिया।
कुछ मुनि के सिद्धपद से सिद्धक्षेत्र यह हुआ।।हे नाथ.।।११।।

जिननाथ मुनिसुव्रतेश की बड़ी प्रतिमा।
श्री ज्ञानमती मात प्रेरणा की है महिमा।।हे नाथ.।।१२।।

जयमाल में यह अर्घ्य थाल मैं सजा लाया।
अर्पण करूँ अनर्घ्यपद की प्राप्त हो छाया।। हे नाथ.।।१३।।

भगवान श्री जिनेन्द्र से विनती यही मेरी।
मिट जावे ''चन्दनामती'' संसार की फेरी।।हे नाथ.।।१४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमुनिसुव्रतनाथजन्मभूमिराजगृहीतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्यप्राणी जिनवरों की जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.१६

शौरीपुर तीर्थ पूजा

स्थापना (शंभु छंद)

तीर्थंकर प्रभु श्री नेमिनाथ का, शौरीपुर में जन्म हुआ।
माँ शिवादेवि अरु पिता समुद्रविजय का शासन धन्य हुआ।।
उस जन्मभूमि शौरीपुर की, पूजन हेतू आह्वानन है।
सन्निधीकरण विधि के द्वारा, मैं करूँ तीर्थ स्थापन है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं स्थापनं।

अष्टक

तर्ज-तीरथ करने चली सती.....

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्में बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
नीर पिया भव भव में मैंने, प्यास न लेकिन बुझ पाई।
प्रभु पद में जलधारा देने, हेतु तभी स्मृति आई।।
स्वर्ण कलश में जल लेकर, पूजा कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि के साथ वहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर की।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।। टेक०।।

चन्दन एवं चन्द्रकिरण, तन को शीतल कर सकते हैं।
मन को शीतल करने में, नहिं वे सक्षम हो सकते हैं।।
सुरभित चंदन घिस कर अब, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
आतम सुख का स्वाद चखा नहिं, इसीलिए दुख पाया है।
खंडित सुख को समझ अखंडित, उसमें ही भरमाया है।।
अक्षयपद हित अक्षत ले, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
हे प्रभु! कामदेव ने सारे, जग को अपने वश में किया।
इससे बचने हेतु सुगंधित, पुष्प चरण में अर्प दिया।।
निज सौरभ हित पुष्प को ले, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
सभी तरह के पकवानों से, भूख मिटानी चाही है।

लेकिन कुछ पल भूख मिटी, नहिं शाश्वत तृप्ती पाई है।।
अब नैवेद्य थाल लेकर, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
अज्ञान तिमिर के कारण आतम, में अंधियारा छाया है।
इसीलिए प्रभु सम्मुख आकर, घृत का दीप जलाया है।।
आरति थाल सजाकर मैं, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
कर्म मुझे दुख देते हैं, तुम तो प्रभु कर्मरहित स्वामी।
अशुभ कर्म हों भस्म मेरे, इसलिए शरण आया स्वामी।।
अग्निपात्र में धूप जला, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
बहुत तरह के फल खाकर, रसना तृप्त न हो पाई।
इसीलिए ताजे फल लेकर, प्रभु अर्चन की मति आई।।

शिवफल हित कुछ फल लेकर, पूजन कर लूँ तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजन करने चलो सभी, शौरीपुर में नेमीश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।टेक०।।
जल गंधाक्षत आदि अष्ट, द्रव्यों का थाल सजाया है।
निज अनर्घ्य पद प्राप्त करूँ, यह भाव हृदय में आया है।।
रत्नत्रय हित अर्घ्य चढ़ा, पूजन कर लूं तीर्थेश्वर की।
जन्मभूमि से सार्थ जहाँ, जन्मे बाइसवें जिनवर जी।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छन्द

गंगा नदी के नीर से कलशे को भर लिया।
प्रभु नेमि जन्मभूमि पे जलधार कर दिया।।
राजा प्रजा व राष्ट्र भर में शांति कीजिए।
मेरी भी आतमा में नाथ! शांति दीजिए।।१०।।

शांतये शांतिधारा

शौरीपुरी उद्यान में जो फूल खिले हैं।
वहाँ नेमिनाथ जन्म के उल्लेख मिले हैं।।
उन पुष्पों से प्रभु पाद में पुष्पांजली करूँ।
निज आत्मसंपदा को पा दुख शोक सब हरूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः

(इति मण्डलस्योपरि पञ्चदशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (दोहा)

कार्तिक सुदी छठ को जहाँ, हुई रतन की वृष्टि।
शौरीपुर की वह धरा, गर्भागम सुपवित्र।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथगर्भकल्याणक पवित्रशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि छठ नेमिप्रभु, जन्मे ले त्रय ज्ञान।
शौरीपुर वह जन्मभू, जजूँ मिले शिवथान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मकल्याणक पवित्रशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि छठ को हुआ, नेमिनाथ वैराग।
ब्याह न कर वन चल दिये, कर राजुल का त्याग।।३।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयन्तपर्वतस्य सहसाम्रवने दीक्षाकल्याणकप्राप्त श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्जयन्त गिरि पर हुआ, प्रभु को केवलज्ञान।
आश्विन सुदि एकम तिथी, जजूं नेमि भगवान।।४।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयन्तपर्वतस्योपरिकेवलज्ञानकल्याणकप्राप्त श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (दोहा)

गर्भ जन्म कल्याण से, स्थल जो सु पवित्र।
पूजूँ मैं पूर्णार्घ्य ले, शौरीपुर को नित्य।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथगर्भजन्मकल्याणकपवित्रशौरीपुर-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं शौरीपुरजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज–हे वीर! तुम्हारे द्वारे पर.....

हे नेमिनाथ! तुम जन्मभूमि की, गुणगाथा गाएं कैसे।
शौरीपुर अतिशय पुण्यभूमि की, महिमा बतलाएं कैसे।।१।।

शब्दों की संख्या में कैसे, अगणित गुण बांधे जा सकते।
इन रूक्ष शब्द कण के द्वारा, भक्ति को दरशाएं कैसे।।२।।

जैसे दीपक से सूर्यदेव की, अर्चा लोक में होती है।
वैसे ही अल्पमती द्वारा, प्रभु गुणगाथा गाएं कैसे।।३।।

जैसे नदी का जल नदि में ही, अर्पण करते देखा मैंने।
वैसे ही अल्पशक्ति द्वारा, प्रभु जयमाला गाएं कैसे।।४।।

जैसे फूलों से वृक्षों की, पूजा करते हैं मूढ़मती।
वैसे ही तुच्छ भक्ति पुष्पों से, गुणमाला गाएं कैसे।।५।।

शौरीपुर राजा समुद्रविजय, श्री शिवादेवि संग रहते थे।
कर रहे देव जिनकी पूजा, उन महिमा बतलाएं कैसे।।६।।

इन सुत तीर्थंकर नेमी की, बारात चली जूनागढ़ को।
पशुबंधन लख वैराग्य हुआ, उस क्षण को बतलाएं कैसे।।७।।

राजुल ने भी नहिं ब्याह किया, पति का पथ अपनाया उसने।
दीक्षा लेकर आर्यिका बनी, उसका तप बतलाएं कैसे।।८।।

प्रभु नेमिनाथ ने ऊर्जयन्त, गिरि से मुक्ती पद प्राप्त किया।
निर्वाणथान वह पूज्य हुआ, उसकी महिमा गाएं कैसे।।९।।

इन बालयती तीर्थंकर का, जन्मस्थल शौरीपुर माना।
जहाँ अद्यावधि है जिनमंदिर, उसका यश बतलाएं कैसे।।१०।।

इक मंदिर और बटेश्वर में, जहाँ यात्री नित्य ठहरते हैं।
अतिशयकारी प्रतिमाओं का, हम अतिशय बतलाएं कैसे।।११।।

उस जन्मभूमि शौरीपुर को, पूर्णार्घ्य समर्पण है मेरा।
''चन्दनामती'' है चाह यही, रत्नत्रय को पाएं कैसे।।१२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीनेमिनाथजन्मभूमिशौरीपुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

पूजा नं.१७

कुण्डलपुर तीर्थ पूजा

स्थापना (चौबोल छन्द)

महावीर प्रभु जहां जन्म ले, सचमुच बने अजन्मा हैं।
जिस धरती पर त्रिशला मां ने, एक मात्र सुत जनमा है।।
उस बिहार की कुण्डलपुर, नगरी को वन्दन करना है।
वन्दन कर उस तीरथ का, हर कण चन्दन ही समझना है।।

दोहा

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
अष्टद्रव्य का थाल ले, पूजा करूँ महान।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छंद)

जिनवर ने कर्मों की ज्वाला, समता के जल से शांत किया।
भक्तों ने ले जल की धारा, जिनवर का पद प्रक्षाल किया।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जहां प्रभु सन्मति को लखते ही, मुनियों की शंका दूर हुई।
जहां की चंदनसम माटी से, भव की बाधा निर्मूल हुई।।

महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुंडलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने अक्षय पद पाने का, जिस धरती पर संकल्प लिया।
अक्षत के पुंज चढ़ा मैंने, उन प्रभु अर्चन का यत्न किया।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

महलों का सुख वैभव तज कर, जहाँ वीर बने वैरागी थे।
कर कामदेव पर विजय चले, शिवपथ के वे अनुरागी थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

देवों द्वारा लाया भोजन, महावीर सदा ही खाते थे।
क्षुधरोग विनाशन हेतु तथापी, वे निज काय तपाते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत व अवधि त्रय ज्ञान सहित, तो वीर प्रभू थे जन्म से ही।
मनपर्ययज्ञान हुआ प्रगटित, प्रभुवर के दीक्षा लेते ही।।

महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूं शत वन्दन मैं।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्ल ध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूप जलाते थे।
उनकी सौरभ पाने हेतु, प्रभु पास भक्तगण आते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभु ने तप करके, कैवल्य महाफल पाया है।
भक्तों ने इच्छा पूर्ति हेतु, फल प्रभु चरणों में चढ़ाया है।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अष्टकर्म के नाशक प्रभु की, अष्टद्रव्य से पूजन है।
''चन्दनामती'' शिवपद हेतू, सन्मति से मेरा निवेदन है।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छन्द

महावीर प्रभु की भक्ति की रसधार जो बही।
उससे मनुज व देवों में सुमति प्रगट हुई।।

निज शांति व शीतल सहज अनुभूति मैं करूँ।
जिनवर का ज्ञान अंश मैं भी निज हृदय भरूँ।।१।।

शांतये शांतिधारा.....

निज ज्ञान के पुष्पों को बिखेरा जो प्रभू ने।
उसकी सुगन्ध ग्रहण कर ली बहुत जनों ने।।
भगवान मुझे यदि तेरे, गुण पुष्प मिल सकें।
तो मेरा मोक्षमार्ग बन्द, स्वयं खुल सके।।

दिव्य पुष्पांजलिः.....

(इति मण्डलस्योपरि षोडशमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रत्येक अर्घ्य (शंभु छन्द)

कुण्डलपुर में सिद्धार्थ नृपति, निज राज्य का संचालन करते।
प्रियकारिणि त्रिशला रानी के संग, पुण्य का संपादन करते।।
आषाढ़ सुदी छठ तिथि में नंद्यावर्त, महल का भाग्य जगा।
जहाँ गर्भ कल्याणक हुआ वीर का, मैं पूजूँ वह धाम महा।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रगर्भकल्याणक पवित्रकुण्डलपुरतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चैत्र त्रयोदशि को महावीर, प्रभू जन्मे कुण्डलपुर में।
स्वर्गों में बाजे बाज उठे, सुरपति के स्वयं ही मुकुट नमे।।
सुरशैल शिखर पर जन्मोत्सव कर, कुण्डलपुर प्रभु को लाये।
उस जन्मभूमि का अर्चन कर, हम सब मन में अति हरषाये।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रजन्मकल्याणक पवित्रकुण्डलपुरतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जातिस्मरण वीर प्रभु को, दीक्षा का भाव हृदय जागा।
दीक्षा लेते ही प्रगट हुए, चउ ज्ञान मोहप्रभु का भागा।।

वैराग्य भूमि कुण्डलपुर को, मैं जजूँ मुझे वैराग्य मिले।
नृप कूल ने प्रथम आहार दिया, मैं नमूँ पुण्य साम्राज्य मिले।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रदीक्षाकल्याणक पवित्रकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलपुर निकट जृंभिका में ऋजुकूला तट पर ज्ञान हुआ।
उसके ऊपर गगनांगण में, प्रभु समवसरण निर्माण हुआ।।
मैं केवलज्ञान कल्याणक की, भूमी का नित्य यजन कर लूँ।
सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रकेवलज्ञानकल्याणक पवित्रजृंभिका-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जिस नगरी की रज महावीर के, कल्याणक से पावन है।
जहाँ इन्द्र इन्द्राणी की भक्ती का, सदा महकता सावन है।।
उस कुण्डलपुर में नंद्यावर्त, महल का सुन्दर परिसर है।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर नमूँ वहाँ, महावीर की प्रतिमा मनहर है।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र गर्भजन्मदीक्षाआदिकल्याणक पवित्रकुण्डलपुर-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं कुण्डलपुरजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

तर्ज-जरा सामने तो आओ.....

जहाँ जन्मे वीर वर्धमान जी, जहाँ खेले कभी भगवान जी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।टेक.।।
कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ, के सुत सिद्धार्थ हुए।
जो वैशाली के नृप चेटक, की पुत्री के नाथ हुए।।
रानी त्रिशला की खुशियां अपार थी, सुन्दरता की वे सरताज थीं।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।१।।

राजहंस से मानसरोवर, जैसे शोभा पाता है।
वैसे ही प्रभु जन्म से जन्म, नगर पावन बन जाता है।।
जय जय होती है प्रभु पितु मात की, इन्द्र गाता है महिमा महान भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।२।।
प्रान्त बिहार में नालंदा के, निकट बसा कुण्डलपुर है।
छब्बिस सौंवे जन्मोत्सव में, गूंजा ज्ञानमती स्वर है।।
तभी आई घड़ी उत्थान की, होती दर्शन से जनता निहाल भी।
उस कुण्डलपुर की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।३।।
प्रभु तेरी उस जन्मभूमि का , कण-कण पावन लगता है।
छोटा सा भी उपवन तेरा, नन्दन वन सम लगता है।।
अर्घ्य का लाके इक लघु थाल जी, करूँ अर्पण झुका निज भाल भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।४।।
इस तीरथ के अर्चन से, आत्मा तीरथ बन सकती है।
इसकी कीरत के कीर्तन से, कीर्ति स्वयं की बढ़ती है।।
करूँ ''चन्दनामती'' प्रभु आरती, भरूँ मन में सुगुण की भारती।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमि कुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द-**जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।**
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, चन्दना वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

मंत्र जाप्य-ॐ ह्रीं षोडशजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(१०८ बार लवंग या पीले पुष्पों से करें।)

G G G G G

बड़ी जयमाला

शंभु छन्द

जय जय तीर्थंकर तीर्थनाथ, तुम धर्मतीर्थ के कर्ता हो।
जय जय चौबीस जिनेश्वर तुम, त्रिभुवन गुणमणि के भर्ता हो।।
जय ऋषभदेव से वीर प्रभू तक, सबकी महिमा न्यारी है।
इन पंचकल्याणक सहित प्रभू को, नितप्रति धोक हमारी है।।१।।
चौबीसों जिन की जन्मभूमि का, अतिशय ग्रंथों में आया।
जहाँ पन्द्रह-पन्द्रह मास रतन-वृष्टि सुरेन्द्र ने करवाया।।
वह तीर्थ अयोध्या प्रथम तथा, कुण्डलपुर जन्मभूमि अन्तिम।
जहाँ तीर्थंकर माताओं ने, देखे सोलह सपने स्वर्णिम।।२।।
यूँ तो सब तीर्थंकर की शाश्वत जन्मभूमि है अवधपुरी।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में हो गईं पृथक् ये जन्मथली।।
इस कारण तीजे काल में ही, हुई कर्मभूमि प्रारंभ यहाँ।
तब नगरि अयोध्या धन्य हुई, हुआ प्रथम प्रभू का जन्म जहाँ।।३।।
उस शाश्वत तीर्थ अयोध्या में, इस युग के पाँच प्रभू जन्मे।
ऋषभेश अजित अभिनंदन एवं, सुमति अनंत उन्हें प्रणमें।।
गणधर मुनि एवं इन्द्र आदि से, वंद्य अयोध्या नगरी है।
वृषभेश्वर की ऊँची प्रतिमा, जहाँ तीर्थ की महिमा कहती है।।४।।
जहाँ पाँच जिनेश्वर की टोंकों के, साथ बड़े दो मंदिर हैं।
जहाँ रायगंज के परिसर में, सम्पूर्ण व्यवस्था सुंदर हैं।।
आचार्य देशभूषण जी एवं, गणिनी माता ज्ञानमती।
इन उभय प्रेरणाओं से हुई, शुभ तीर्थ अयोध्या की प्रगती।।५।।
है बारम्बार नमन मेरा, उस तीर्थराज की धरती को।
युग-युग तक अमर रहे तीर्थंकर, की शाश्वत जन्मस्थलि वो।।

तीर्थंकर के पितु-मात तथा, वह महल भी मंगलकारी है।
प्रभु के पदरज से पावन तीरथ, का कण-कण सुखकारी है।।६।।
इन जन्मभूमियों की श्रेणी में, श्रावस्ती संभव प्रभु की।
कौशाम्बी पद्मप्रभ की वाराणसि सुपार्श्व पारस प्रभु की।।
चन्द्रप्रभ जन्में चन्द्रपुरी में, पुष्पदन्त काकन्दी में।
भद्रिकापुरी में शीतल जिन, जन्मे श्रेयाँस सिंहपुरि में।।७।।
इनको वन्दन कर जन्मभूमि का, जीर्णोद्धार विकास करो।
तीनों लोक में पूज्य तीर्थ भूमी से स्वयं प्रकाश भरो।।
जिससे यह आत्मा भी इक दिन, तीरथ स्वरूप को प्राप्त करे।
सांसारिक जन्ममरण आदिक, सब दुःखों का संताप हरे।।८।।
चम्पापुर नगरी वासुपूज्य की, जन्मभूमि से पावन है।
पाँचों कल्याणक से केवल, चम्पापुर ही मनभावन है।।
कम्पिलापुरी में विमलनाथ, है धर्मनाथ की रत्नपुरी।
श्रीशांति कुंथु अरनाथ तीन की, जन्मभूमि हस्तिनापुरी।।९।।
मिथिलानगरी में मल्लिनाथ, नमिनाथ जिनेश्वर जन्मे हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर राजगृही, नेमी प्रभु शौरीपुर में हैं।।
कुण्डलपुर में महावीर प्रभू का, नंद्यावर्त महल सुन्दर।
प्राचीन छवी के ही प्रतीक में, ऊँचा बना सात मंजिल।।१०।।
महावीर प्रभू का छब्बिस सौवाँ, जन्मकल्याणक जब आया।
तब ज्ञानमती माताजी ने, कुण्डलपुर विकसित करवाया।।
महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, का यश फैले जग भर में।
सब तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का प्रचार हो घर-घर में।।११।।
ये सोलह तीर्थ सभी तीर्थंकर, के जन्मों से पावन हैं।
ये गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक से भी पावन हैं।।
इनके वन्दन से निज घर में, लक्ष्मी का वास हुआ करता।
इनके वन्दन से आतम में, सुख शांती लाभ हुआ करता।।१२।।

भगवान न जब तक बन सकते, इन तीर्थों की यात्रा कर लो।
तीरथ यात्रा के माध्यम से, संसार महोदधि को तर लो।।
पूर्णार्घ्य महार्घ्य समर्पण कर, सब तीर्थ भाव से नमन करो।
पूजन का फल पाने हेतू, सब राग द्वेष को शमन करो।।१३।।
ज्यों राजहंस से मानसरोवर, की पहचान कही जाती।
त्यों ही जिनवर जन्मों से धरती, पावन पूज्य कही जाती।।
तीर्थंकर जन्मभूमि तीर्थों का, यह विधान मंगलकारी।
करने व कराने वालों को, फल मिलता इससे सुखकारी।।१४।।
सम्यग्दर्शन में दृढ़ता हो, प्रभु भक्ति ही बस लक्ष्य रहे।
रत्नत्रय की हो प्राप्ति प्रभु, गुणगान में रसना दक्ष रहे।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, ''चन्दनामती'' कर पाऊँ मैं।
सुगति में होवे गमन पुनः, क्रमशः शिवपद पा जाऊँ मैं।।१५।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकराणां जन्मभूमिअयोध्याप्रभृतिकुण्डलपुरपर्यन्त-समस्तषोडशतीर्थक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की शृँखला में, चन्दना वे आएंगे।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।

G G G G G

प्रशस्ति

दोहा

चौबिस तीर्थंकर प्रभू, जन्मभूमि का विधान।
सोलह तीर्थ प्रसिद्ध जो, उनका है गुणगान।।१।।

गणिनी माता ज्ञानमति, की शिष्या अज्ञान।
रचा ''चन्दनामति'' सुखद, जन्मभूमि का विधान।।२।

गुरुप्रेरणा है निमित, इस रचना में मूल।
क्षमा करें अतएव वे, हो यदि कोई भूल।।३।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, उनतिस मास सुज्येष्ठ।
कृष्ण चतुर्दशि की तिथी, मानी है अतिश्रेष्ठ।।४।।

शांतिनाथ प्रभु जन्म तप, मोक्षकल्याण प्रसिद्ध।
महावीर जन्मस्थली, कुण्डलपुरी पवित्र।।५।।

जन्मभूमि पर रच दिया, जन्मभूमि का पाठ।
कृष्ण चतुर्दशि ज्येष्ठ को, पूर्ण हुआ यह पाठ।।६।।

जब तक धरती पर रहें, जन्मभूमि के तीर्थ।
तब तक सब गाते रहें, इन तीर्थों की कीर्ति।।७।।

इति शं भूयात्।

G G G G G

आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आरति करो रे,
चौबिस तीर्थंकर जन्मभूमि की आरति करो रे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे।
चौबिस तीर्थंकर जन्मभूमि की, आरति करो रे।।टेक.।।
शाश्वत जन्मभूमि जिनवर की, नगरि अयोध्या मानी है।
पर हुण्डावसर्पिणी युग की, बदली पुण्य कहानी है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
सब तीर्थंकर की पुण्यभूमि की, आरति करो रे।।चौबिस०।।१।।
ऋषभ, अजित, अभिनन्दन, सुमती, प्रभु अनन्त तीर्थंकर ने।
जन्म अयोध्या में लेकर, पावनता भर दी फिर उसमें।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
शुभ तीर्थ अयोध्या जन्मभूमि की, आरति करो रे।।चौबिस०।।२।।
श्रावस्ती, कौशाम्बी, वाराणसी, चन्द्रपुरि, काकन्दी।
संभव, पद्म, सुपारस, पारस, चन्द्र व पुष्पदंत नगरी।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीर्थंकर जन्म व कर्मभूमि की आरति करो रे।।चौबिस०।।३।।
तीर्थ भद्रिकापुरी, सिंहपुरि, चंपापुरि, कम्पिलनगरी।
शीतल, श्रेयो, वासुपुज्य एवं प्रभु विमल की जन्मपुरी।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
चारों कल्याणक पावन भू की आरति करो रे।।चौबिस०।।४।।
रत्नपुरी, हस्तिनापुरी, मिथिला, राजगृह, शौरीपुर।
धर्म, शांति, कुंथू, अर, मल्ली, नमि, मुनिसुव्रत, नेमीश्वर।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
आठों जिनवर की जन्मभूमि की आरति करो रे।।चौबिस०।।५।।
कुण्डलपुर महावीर प्रभू की जन्मभूमि अतिपावन है।
चौबिस जिन की जन्मभूमियाँ सोलह अति मन भावन है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
"चन्दनामती" सब पुण्यभूमि की, आरति करो रे।।चौबिस०।।६।।
जन्मभूमि का यह विधान, सबके जीवन को सफल करे।
सबकी पुनः पुनः यात्रा, आतमतीर्थ को प्रगट करे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीरथ एवं तीर्थंकर प्रभु की आरति करो रे।।चौबिस०।।७।।

G G G G G

भजन

-ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

तर्ज-माई रे माई.....

तीर्थंकर प्रभु जन्मभूमि का, पाठ रचा सुखकारी।
करो कराओ भक्ति भाव से, सब जन मंगलकारी।। बोलो जय.....।।टेक०।।
आर्यखण्ड वसुधा पर सदा, जनमते चौबिस जिनवर।
नगरी है शुभ तीर्थ अयोध्या, जन्मभूमि जो शाश्वत।।
जिनवर जन्म समय से पहले.....
जिनवर जन्म समय से पहले, रत्नवृष्टि हो भारी।।करो.....।।१।।
कालदोष हुण्डावसर्पिणी, का प्रभाव ही जानो।
पृथक्-पृथक् हो गए जन्मथल, भारत भू पर मानो।।
ग्रन्थ पुराणों में इन सबका.....
ग्रन्थ पुराणों में इन सबका, वर्णन है मनहारी।।करो.....।।२।।
ये चौबिस तीर्थंकर, धर्मतीर्थ के कर्ता मानें।
तीर्थंकर के जन्म से पावन, सोलह तीर्थ बखाने।।
इनके वन्दन से निज आत्मा.....
इनके वन्दन से निज आत्मा, तीर्थरूप बन जाती।।करो.....।।३।।
गणिनी ज्ञानमती माताजी, की हैं शिष्या प्यारी।।
नाम चन्दनामती मात, रचनाएं अद्भुत सारी।।
गुरू प्रेरणा मिल गई उनको.....
गुरू प्रेरणा मिल गई तब, हुई रचना अतिशयकारी।।करो.....।।४।।
भगवन नहिं बनते जब तक, इन तीर्थ की यात्रा कर लो।
इन यात्राओं के माध्यम से , भववारिधि तुम तर लो।।
मिश्री सम मीठा फल देगी.....
मिश्री सम मीठा फल देगी, जिनवर भक्ति तुम्हारी।।करो.....।।५।।
इक सौ तेरह अर्घ्य हैं इसमें, जो प्रभु के गुण गाते।
एक-एक प्रभु के जीवन, दर्शन को सहज बताते।।
करो कराओ सब श्रद्धा से.....
करो कराओ सब श्रद्धा से, मनवाञ्छित फलदायी।।करो.....।।६।।
मंगलकारी इस विधान को, वन्दन कर हरषाऊँ।।
इस विधान की रचयित्री को, शत शत शीश झुकाऊँ।।
मुक्तिवधू वरने को 'इन्दू'.....
मुक्तिवधू करने को 'इन्दू', प्रभु पद थोक हमारी।।करो.....।।७।।

G G G G G

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-हे वीर तुम्हारे.....

प्रभु ऋषभदेव महावीर महोत्सव, मिलकर हमें मनाना है।
इस माध्यम से ही चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गाना है।। टेक.।।

युग की आदि में प्रथम जिनेश्वर, ऋषभदेव भगवान हुए।
महावीर प्रभू उस ही श्रेणी में, चौबिसवें जिनराज हुए।।
उनके पावन उपकारों से, जग को परिचित करवाना है।
इस माध्यम से ही चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गाना है।।१।।

भगवन्तों के उपदेशों को, सन्तों ने जग में फैलाया।
इस श्रेणी में गणिनी माता, श्री ज्ञानमती ने बतलाया।।
वृषभेश्वर की कल्याणक तिथियाँ, उत्सव सहित मनाना है।
इस माध्यम से ही चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गाना है।।२।।

महावीर प्रभू की जन्मजयन्ती आदि उत्सव खूब करें।
लेकिन संस्कृति के आद्य प्रणेता, ऋषभदेव को नहिं भूलें।।
''चन्दनामती'' जैनी संस्कृति को, इसी तरह चमकाना है।
इस माध्यम से ही चौबीसों, तीर्थंकर का गुण गाना है।।३।।

G G G G G

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

स्थापना

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधीकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।.....

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।१।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीस्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।
उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।२।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।३।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।४।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।५।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।६।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन हैं।।७।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।८।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेर मन भी पावन है।।९।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेरछंद

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा.....।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्.....।।

जयमाला

दोहा

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन-नागिन-मेरा मन डोले.....।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ मोहिनी जी हर्षाईं।।माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।१।।
बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।।माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।२।।
शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।।माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।३।।
माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।।माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।४।।
तीर्थ अयोध्या, मांगीतुंगी का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।

प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।५।।
कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।।माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार में,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।६।।
तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
उनके कल्याणक तीर्थों का जीर्णोद्धार कराया।।माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।७।।
यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।८।।
गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।९।।

दोहा

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।१०।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

ब्राह्मी माता के सदृश, ज्ञानमती जी मात।
सदी बीसवीं की प्रथम, क्वांरी कन्या आप।।

G G G G G